मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल

Forts and Palaces of Madhya Pradesh

Booklet

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल

मध्य प्रदेश राज्य को राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 की धारा के अन्तर्गत 1 नवम्बर, 1956 को बनाया गया। इसमें मध्य प्रदेश के पुनर्गठन से पूर्व के जिले, पूर्व मध्य भारत राज्य, विन्ध्य प्रदेश और कोटा जिले की सिरौंज तहसील शामिल थे। मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल 4,43,446 वर्ग कि.मी. है और यह भारतीय राज्यों में सबसे बड़ा राज्य है। यह राज्य 149 व्यक्ति प्रति वर्ग कि. मी. की सघनता सहित जनसंख्या में पांचवें स्थान पर है। इस राज्य में आदिवासियों की अधिकतम जनसंख्या है। मध्य प्रदेश को राजधानी भोपाल सहित प्रशासनिक प्रयोजनों हेतु 12 खण्डों में विभाजित किया गया है, जिनमें ग्वालियर, इन्दौर, रीवा, उज्जैन, जबलपुर आदि शामिल हैं।

यहां पर विन्ध्य तथा सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाएं हैं, जिन्हें ग्वालियर, असीरगढ़, कालिंजर, माण्डू आदि जैसे अजेय दुर्गों के निर्माण हेतु आदर्श माना जाता था। अवसादी चट्टानी तलों द्वारा किलेबन्द दीवारों को अतिरिक्त मज़बूती प्राप्त होती थी, जिन पर ये दुर्ग बने हैं। इन दुर्गों के संरक्षण का एक अन्य पहलू था– निचले स्तर पर घना वन आवरण। इसके अलावा माण्डू, धार, ग्वालियर तथा असीरगढ़ जैसे दुर्ग, नर्मदा तथा चम्बल नदी के निकट स्थित हैं, जो वर्षा ऋतु में सदैव बाढ़ग्रस्त रहती थीं। इन नदियों में वर्ष भर जल की अधिकता के कारण दुश्मन के लिए इन्हें पार कर पाना भी कठिन था।

मध्य प्रदेश में सबसे पुराना दुर्ग ताम्र-पाषाण युग में निर्मित हुआ था। उदाहरण के लिए, एरण की खुदाई से परकोटों के हल्के फुल्के साक्ष्य मिले हैं। मध्य प्रदेश के ज़्यादातर दुर्ग गिरिदुर्ग हैं। उदाहरण स्वरूप ग्वालियर दुर्ग, नरवर दुर्ग, कालिंजर दुर्ग तथा असीरगढ़ दुर्ग सपाट ऊंचाई वाली पहाड़ी पर स्थित हैं।

7वीं शताब्दी ईसवी में हर्षवर्धन राजवंश के पतन से उत्तर भारत में राजपूतों का उदय हुआ, जिनमें से प्रमुख थे – कन्नौज के गुर्जर और प्रतिहार, जेजकाभुक्ति के चन्देल, दाहला – मंडला के कलचुरी तथा मालवा का परमार राजवंश। गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के मिहिर भोज प्रथम ने अपने साम्राज्य का उत्तर प्रदेश से राजस्थान के प्रमुख भाग तक तथा उत्तर-पूर्व में सौराष्ट्र से बुन्देलखण्ड तक विस्तार किया। उसके अधीन अनेक दुर्ग थे, जैसे– ग्वालियर दुर्ग, नरवर दुर्ग, आदि।

चन्देल राजवंश के यशोवर्मन ने कालिंजर दुर्ग पर कब्ज़ा प्राप्त कर 11वीं शताब्दी ईसवी में बुन्देलखण्ड में अपनी सत्ता स्थापित की। उसने न केवल बुन्देलखण्ड प्रदेश के गुर्जरों तथा प्रतिहारों, वरन् मालवा के परमारों को भी अपने अधीन कर लिया। चन्देल शासकों के अधीन एक अन्य महत्वपूर्ण दुर्ग था – अजयगढ़।

कलचुरी राजवंश ने उत्तर में गोमती से लेकर दक्षिण में नर्मदा, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, सागर तथा मध्य प्रदश के जबलपुर ज़िले के भाग और उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय भाग तक फैले विशाल राज्य पर अधिकार प्राप्त किया।

मालवा के परमार राजवंश ने लगभग 500 वर्षों तक राज्य किया तथा उनकी राजधानी धार बनी रही।

FORTS AND PALACES OF MADHYA PRADESH

Madhya Pradesh was formed under the provisions of the States Reorganisation Act, 1956 on November 1, 1956. It consisted of districts of the former state of Madhya Pradesh, the former state of Madhya Bharat, Vindhya Pradesh and the Sironj subdivision of Kotah district. Madhya Pradesh with an area of 4,43,446 sq.km. is the largest among the Indian states and fifth in population with density of 149 persons per sq.km. Madhya Pradesh has the largest population of *adivasis.* Madhya Pradesh with Bhopal as capital has been divided into 12 divisions for administrative purposes which include Gwalior, Indore, Rewa, Ujjain, Jabalpur, etc.

It has the Vindhya and Satpura range of mountains which were ideal for the construction of impregnable forts like Gwalior, Asirgarh, Kalinjar, Mandu, etc. The fortification walls were provided additional strength by the sedimentary rock beds on the top of which these forts were built. Another aspect of protection was the dense forest cover at the lower level of these forts. Moreover, the forts, like Mandu, Dhar, Gwalior and Asirgarh are situated close to the Narmada and Chambal rivers, which were always flooded during the monsoons and water runs throughout the year making it difficult for the enemies to cross.

The earliest fort built in Madhya Pradesh dates back to Chalcolithic period. For instance, excavations at Eran have brought to light evidences of mud ramparts. Most of the forts in Madhya Pradesh are mountain forts or *Giridurga* for example, the fort of Gwalior, Narwar, Kalinjar and Asirgarh stand on a flat topped hill.

The decline of Harshavardhana's dynasty in the 7th century A.D. in turn led to rise of Rajputs in the northern India, prominent among them were Gurjara-Pratiharas of Kanauj, the Chandellas of Jejakabhukti, the Kalachuris of Dahala-Mandala and the Paramaras of Malwa. Mihir Bhoja I of Gurjara-Pratiharas extended his empire from Uttar Pradesh to major portion of Rajasthan and from Saurashtra to Bundelkhand region in the north east. He had many forts under his control, namely, Gwalior Fort, Narwar Fort, etc.

Yashovarman of Chandellas occupied Kalinjar fort and established his supremacy in the Bundelkhand region in 11th century A.D. He not only subjugated Gurjara-Pratiharas of Bundelkhand region but also Paramaras of Malwa. Another important fort under the Chandellas was the Ajaigarh Fort.

The Kalachuris held sway over a large kingdom extending from Gomti in the north to Narmada in the south, the part of Bundelkhand, Baghelkhand, Sagar, Jabalpur districts of Madhya Pradesh and central part of Uttar Pradesh.

The Paramaras of Malwa ruled for a period of nearly 500 years with their capital at Dhar.

खिलजी शासकों ने 13वीं शताब्दी ईसवी में मालवा पर आक्रमण किया तथा मध्य प्रदेश के अनेक दुर्ग, जैसे– ग्वालियर, नरवर, चन्देरी, अजयगढ़, कालिंजर आदि पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। मोहम्मद बिन तुगलक के कमज़ोर शासन के अधीन, अनेक अधिकारियों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित करने की कोशिश की। इनमें से फ़ीरोज़ शाह तुग़लक के अधीन कार्यरत एक सीमा शुल्क अधिकारी दिलावर खान ग़ौरी को 14वीं शताब्दी ईसवी में मालवा को स्वतंत्र राज्य घोषित करने में सफलता प्राप्त हुई तथा उसने धार को अपनी राजधानी बनाया। उसके बेटे होशंगशाह ने 1405 ईसवी में अपनी राजधानी धार से माण्डू स्थानांतरित की। होशंगशाह की 1435 ईसवी में मृत्यु के पश्चात् मालवा में खिलजी महत्वपूर्ण रूप में उभरे। 1442 ईसवी में महमूद खान खिलजी ने स्वयं को मालवा का सुल्तान घोषित कर दिया। उसके पश्चात् मालवा में अनेक शासक हुए। 1530 ईसवी में हुमायूं, 1545 ईसवी में शेरशाह, 1555 ईसवी में बाज़बहादुर तथा अंततः अकबर के शासन के अधीन मालवा मुग़ल साम्राज्य का हिस्सा बन गया। 17वीं शताब्दी ईसवी में मालवा पर मराठों ने कब्ज़ा जमा लिया, जिस पर 18वीं शताब्दी ईसवी के मध्य में सिन्धिया राजवंश ने उत्तराधिकार प्राप्त किया।

ग्वालियर

संत ग्वाह पा के नाम पर बना ग्वालियर शहर 8वीं शताब्दी ईसवी में स्थापित किया गया था। यह शहर अपने विशाल गिरिदुर्ग के लिए प्रसिद्ध है।

एक अपूर्व दृश्य प्रस्तुत करता यह दुर्ग, भूतल से 100 मीटर की ऊंचाई पर एक सपाट शिखर से युक्त एकाकी चट्टान बालूपत्थर तथा असिताश्म की पहाड़ी पर स्थित है। लगभग 3 कि. मी. लंबा और 500 मीटर तक चौड़ा पहाड़ी पठार उत्तर से दक्षिण की ओर सीध में है और पश्चिमी ओर से एक गहरी तंग 'उरवाही घाटी' से संरक्षित है।

इस दुर्ग की विशेषता है – 15वीं शताब्दी ईसवी में बना राजा मानसिंह का महल, जिसमें पत्थरों की अभिकल्पना कुछ इस प्रकार से की गई है कि उन्हें देखकर लगता है, मानो वे राजपूतों के शौर्य व पराक्रम की गाथा कह रहे हों।

दुर्ग के अन्दर की अन्य प्राचीन इमारतों में तेली-का-मंदिर, सास-बहू का मंदिर तथा निचले भाग में गूजरी महल है, जो देश के उत्कृष्टतम शिल्प संग्रहालयों में से एक है।

ग्वालियर को भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक केन्द्र होने के कारण भी जाना जाता है। अनेक भारतीय शास्त्रीय संगीत के 'रागों' के रचनाकार और सम्राट अकबर के दरबार के 'नव रत्नों' में से एक, मियां तानसेन को ग्वालियर का ही माना जाता है और उनकी समाधि यहीं बनी है। ग्वालियर के नाम पर ही शास्त्रीय संगीत का प्रसिद्ध 'ग्वालियर घराना' है।

The Khaljis invaded Malwa in 13th century A.D. and many forts of Madhya Pradesh like Gwalior, Narwar, Chanderi, Ajaigarh, Kalinjar etc. were captured by them. Under the fragile rule of Mohd.-bin Tughlaq, many officials tried to declare themselves independent. One of them Dilawar Khan Ghori, a custom officer under Firoz Shah Tughlaq succeeded in declaring the independence of Malwa in 14th century A.D. with his seat at Dhar. In 1405 A.D. his son Hoshang Shah shifted the capital from Dhar to Mandu. After the death of Hoshang Shah in 1435 A.D., the Khaljis rose to prominence in Malwa. In 1442 A.D. Mahmud Khan Khalji declared himself as Sultan of Malwa. He was followed by series of rulers - Humayun in 1530 A.D., Sher Shah in 1545 A.D., Baz Bahadur in 1555 A.D. and finally under Akbar's rule Malwa became a part of Mughal empire. In 17th century A.D. Malwa was occupied by the Marathas to be succeeded by Scindia's in mid 18th century A.D.

Gwalior

Gwalior was established in 8th century A.D. and named after saint Gwah Pa. It is renowned for its huge hill-fort.

The fortress, commanding a spectacular view, is situated on a flat-topped isolated rocky sandstone and basalt hill at a height of 100 m. above the plains. About 3 km. in length, and never wider than 500 m., the hill plateau is aligned north to south and protected by a deep gorge called 'Urwahi Valley' on the western side.

The fort has the distinction of housing the 15th century A.D. palace of Raja Man Singh, whose stones, seem styled in such a way as if they are going to speak about the valour and chivalry of Rajputs.

Among other ancient buildings in the fortress are, Teli-ka-Mandir, Saas-Bahu temple and the Gujari Mahal which is located at the foot of the fort, is one of the finest sculpture museums in the country.

Gwalior is also known for being a centre of Indian classical music. Creator of many classical Indian *ragas* and one of the 'nine jewels' at the emperor Akbar's court, Miya Tansen is believed to belong to Gwalior and is burried here. It has the distinction of having a famous classical *gharana,* Gwalior *gharana* named after it.

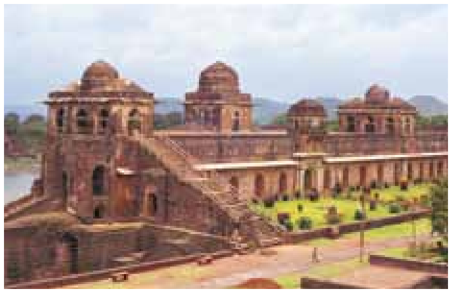

ओरछा

झांसी के समीप स्थित ओरछा को आज भी ऐसे शहर की संज्ञा दी जा सकती है, जो अपने भूतकाल, अर्थात-मध्यकालीन विगत समय में ही जी रहा है और 20वीं शताब्दी ईसवी के विकास क्रम से अछूता सा है। बुन्देल राजा रुद्र प्रताप द्वारा 16वीं शताब्दी ईसवी में बसाए गए ओरछा शहर में महल, दुर्ग, मंदिर और छतरियों सहित परंपरागत हिन्दू, मिश्रित इंडो-सारसीनिक व आलंकारित मुगल कला शैली के संश्लेषण से युक्त अनेक वास्तुकला के नमूने हैं।

उज्जैन

हिन्दुओं की पवित्र सप्तपुरियों में एक, क्षिप्रा नदी के किनारे पर बसा हुआ और प्राचीन भारतीय इतिहास में 'अवन्तिका' नाम से उल्लिखित उज्जैन को, मौर्यकाल में भी एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध उज्जैन वह स्थान है, जहां पर ऐतिहासिक राजा विक्रमादित्य ने अपना प्रसिद्ध दरबार स्थापित किया था। इस दरबार को अपने विद्वानों व कवियों के कारण विशिष्टता प्राप्त थी। इन्हीं राजा विक्रमादित्य के नाम पर प्रसिद्ध हिन्दू 'विक्रम संवत्' है। प्रति बारह वर्षों में होने वाले कुंभ के मेले के लिए भी उज्जैन प्रसिद्ध है।

मांडू

विन्ध्य पर्वत पर लगभग 1950 फुट की ऊंचाई पर स्थित मांडू ने 10वीं शताब्दी ईसवी के अंत में उस समय प्रमुखता प्राप्त की, जब परमार शासकों – मुंज देव एवं भोज ने अपना स्वतंत्र राज्य बनाया। वास्तुकलात्मक दृष्टि से, मांडू, इस्लामी वास्तुकला की प्रान्तीय शैली के दो महत्वपूर्ण केन्द्रों में से एक (दूसरा केन्द्र – धार) होने के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है। मांडू की अधिकांश इमारतें 1401 ईसवी व 1526 ईसवी के बीच मूलतः स्थानीय हिन्दू मंदिरों के अवशेषों का उपयोग करके निर्मित की गई। इनकी निर्माण शैली के छह प्रमुख समूह हैं : राजसी अंतः क्षेत्र, गाँव के आसपास का समूह, सागर तालाब समूह, रेवा कुण्ड समूह, सागर तालाब व गांव के बीच का समूह तथा अन्य मिश्रित स्मारकों का समूह।

पन्ना

बुन्देलखण्ड के पहाड़ी, वन्य क्षेत्र में स्थित पन्ना, रुद्र प्रताप सिंह द्वारा 1886 ईसवी में निर्मित महल के लिए प्रसिद्ध है। इसकी परिकल्पना एक अंग्रेजी वास्तुकार द्वारा की गई थी, जिसने लंदन के सेण्ट पॉल कैथेड्रल की वास्तु-योजना के आधार पर स्थानीय बलराम मंदिर की भी योजना तैयार की थी।

रीवा

रीवा देश के बीहड़ प्रदेश में है, जिसे 'बुन्देलखण्ड' के नाम से जाना जाता है। अकबर द्वारा बुन्देलखण्ड पर विजय प्राप्त करने के पश्चात्, यह अंचल छोटे-छोटे राज्यों में खण्डित हो गया था, जिनमें से रीवा प्रमुख था। वर्तमान मध्य प्रदेश के एक भाग के रूप में शामिल होने तक रीवा, पहले के रीवा राज्य की राजधानी बना रहा। यह इलाहाबाद से लगभग 210 कि. मी. की दूरी पर है।

रीवा अपने श्वेत बाघों, प्राचीन नगर महल तथा रीवा दुर्ग के लिए प्रसिद्ध है, जिसे लगभग 1780 ईसवी में मराठों द्वारा पूर्ण किया गया।

Orchha

Orchha is near Jhansi and can be said as still living in its past, medieval, bygone age having been left untouched by the developments of the 20th century A.D. Founded by the Bundel king Rudra Pratap in the 16th century A.D., Orchha has a number of architectural specimens belonging to synthesis of traditional Hindu, Indo-Saracenic and ornate Mughal art which include a palace, fortress, temple and a cenotaph.

Ujjain

One of the seven sacred Hindu pilgrimage centres on the banks of Kshipra river and also referred to as Avantika in ancient India, Ujjain had also an important place in Mauryan times. Culturally and historically rich, Ujjain is the place where the legendary king Vikramaditya after whom the Hindu 'Vikram Era' is named, held a famous court which had the distinction of having reputed scholars and poets. Ujjan is also famous for the Kumbha mela held after every twelfth year.

Mandu

Situated at a height of approx. 1950 ft. in the Vindhyas, Mandu gained prominence at the end of the 10th century A.D. when Paramara kings – Munja Dev and Bhoj formed an independent kingdom.

Architecturally, Mandu is very famous for being one of the two important centres (other is Dhar) of a provincial style of Islamic architecture. The most of its extant buildings were constructed between 1401 A.D. and 1526 A.D., initially using salvaged masonry from local Hindu temples. The six distinct groups of construction style of Mandu buildings are : the Royal Enclave, the group around the Village, the Sagar Talao group, the Rewa Kund group, the group between the Sagar Talao and the Village, and a group of miscellaneous monuments.

Panna

Panna lies in a hilly, wild area of Bundelkhand and is famous for the palace built by Rudra Pratap Singh in 1886 A.D. It was designed by an English architect, who had also designed the local Balaram Temple on the model of St. Paul's Cathedral, London.

Rewa

Rewa belongs to the wild tract of country known as Bundelkhand. After Akbar conquered Bundelkhand, the territory was fragmented into smaller states, of which Rewa was foremost. Rewa remained capital of the former state of Rewa till it was merged as a part of present Madhya Pradesh. It is at a distance of approx. 210 km. from Allahabad.

Rewa is renowned for its white tigers, Old City Palace and Rewa Fort which was completed in about 1780 A.D. by the Marathas.

दतिया

झांसी से केवल 24 कि. मी. की दूरी पर स्थित दतिया शहर को बुन्देलखण्ड में बुंदेल राजपूतों द्वारा स्थापित किया गया, जिसे 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 17वीं शताब्दी ईसवी के पूर्वार्द्ध की वास्तुकलात्मक शैली के श्रेष्ठ उदाहरण होने का गौरव प्राप्त है। उस दौरान निर्मित आाकर्षक महल थे – नृसिंह देव महल, राजगढ़ स्थित प्राचीन महल तथा राजा बीर सिंह देव का महल।

असीरगढ़

सतपुड़ा की पहाड़ियों में स्थित असीरगढ़ को भारत के प्राचीनतम दुर्गों में से एक होने का वैशिष्ट्य प्राप्त है। एक इतिहासकार के अनुसार, 1370 ईसवी में असा अहीर चरवाहे ने असीरगढ़ दुर्ग को बनाया था, जिसके पूर्वज इस चट्टानी क्षेत्र पर 700 वर्ष से भी अधिक समय तक रहे थे।

असीरगढ़ का किला सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की ऊंची चढ़ाई पर निर्मित है।

धार

10वीं शताब्दी ईसवी में मुंज देव, भोज तथा अन्य परमार राजाओं की नगरी, धार अपने विशाल मज़बूत दुर्गों और प्राचीरों के लिए जानी जाती थी। धार स्थित प्रमुख इमारतें, टूटे हुए प्राचीन हिन्दू मंदिरों से ली गई चिनाई की सामग्री से निर्मित की गई थीं।

मालवा में इण्डो-इस्लामी वास्तुकला की प्रादेशिक शैली के केन्द्र के रूप में माण्डू के साथ धार भी महत्वपूर्ण था, जिसके कुछ उदाहरण आज भी विद्यमान हैं।

कालिंजर

कालिंजरादरी पर्वत पर स्थित कालिंजर, बांदा से 57 कि. मी. दूर है और मध्य प्रदेश में बुन्देलखण्ड अंचल के प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थानों में एक है।

यहां का कालिंजर दुर्ग भारत के प्राचीनतम दुर्गों में से एक है। इस दुर्ग में ही कालिंजर महल भी है।

चन्देरी

मुस्लिम सल्तनत के शासन के दौरान मालवा की उत्तरी राजधानी और कभी पर्याप्त महत्ता प्राप्त चन्देरी, संकरे मार्गों से युक्त बलुआ पत्थर की गहरी खाड़ी में स्थित है।

यहां स्थित आकर्षक वास्तुकलात्मक स्मारक अधिकांशतः मांडू के घूर तथा खिलजी सुलतानों द्वारा ही बनवाए हुए हैं।

इन्दौर

इन्दौर, होल्कर राजवंश की पूर्व राजधानी है, जिसे 17वीं शताब्दी ईसवी के उत्तरार्द्ध में अहल्या बाई, राजवंश की द्वितीय शासिका द्वारा एक छोटे से गांव के रूप में स्थापित किया गया था। सरस्वती तथा कहान नदी के किनारों पर स्थित इन्दौर अब बदल गया है तथा इसका पुराना क्षेत्र पश्चिम की ओर व नया क्षेत्र पूर्व की ओर है। यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।

समृद्ध व विकासशील शहर, इन्दौर को महाराजा मल्हार राव होल्कर द्वितीय द्वारा निर्मित जूना रजवाड़ा या प्राचीन महल जैसी इमारतों की शानदार श्रृंखला होने का गौरव प्राप्त है। इन्दौर की अन्य प्रसिद्ध इमारतों में लाल बाग महल, सुख-निवास महल, दुर्याव महल और नर्बदा महल उल्लेखनीय हैं।

Datia

Datia, a town just 24 km. off from Jhansi, has the imortance of owning the best surviving examples of architectural style of the late 16th and early 17th centuries A.D. that flourished under the Bundela Rajputs in Bundelkhand area. The interesting palaces built during that period were Nrising Dev Palace, Old Palace at Rajgarh and Raja Bir Singh Deo's Palace.

Asirgarh

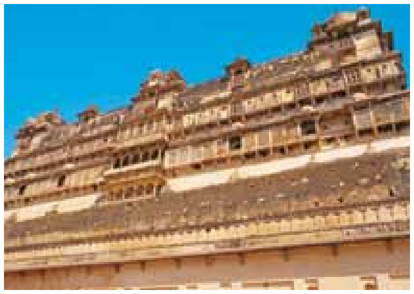

Asirgarh situated in the Satpura range has the distinction of having one of the oldest forts in India. According to one of the historian, Asirgarh Fort was built in 1370 A.D. by a herdsman Asa Ahir whose ancestors had occupied this rocky area for over 700 years.

Asirgarh Fort is built on a high slope of an isolated outcrop of the Satpura range.

Dhar

Dhar, the city of Munja Dev, Bhoj and other Paramar kings during the 10th century A.D., was known for its gigantic strong forts and ramparts. The principal edifices at Dhar were built from masonry taken from earlier dismantled Hindu temples.

Dhar together with Mandu was important as the centre of a provincial style of Indo-Islamic architecture in Malwa, of which some examples are still in existence.

Kalinjar

Situated in the Kalinjaradri hill, Kalinjar is 57 km. from Banda, and is one of the ancient and historical sites in Bundelkhand region of Madhya Pradesh.

Its Kalinjar Fort is one of the oldest forts in India. The Kalinjar Palace is built within the fort.

Chanderi

Once a town of considerable importance and northern capital of Malwa during the Muslim Sultanate rule, Chanderi is picturesquely situated in a great bay of sandstone hills pierced with narrow passes.

It has interesting architectural monuments mostly built by Ghurid and Khalji Sultans of Mandu.

Indore

Indore is the former capital of the Holkar dynasty which was established as a small village in later half of 17th century A.D. by the second chief of the dynasty, Ahlya Bai. Situated on the banks of the Sarasvati and the Kahan rivers, Indore has changed over the years where the older areas are in the western side and the new ones in the east. It is the largest city in the state.

Indore, an affluent developing city, can boast of splendid range of buildings like, the Juna Rajawada or Old Palace built by Maharaja Malhar Rao Holkar II. Other famous buildings of Indore are – Lal Bagh Palace, Sukh-Niwas Palace, Duryao Mahal and Nurbada Mahal.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

इस पैकेज में दिए गए 24 रंगीन चित्रों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गत्ते पर लगा कर इनका शीर्षक तथा चित्र के पीछे दिया गया मुख्य विवरण स्थानीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर उन विषयों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जो इनसे संबंधित हों। अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित कर चित्रों पर कार्य कर सकते हैं :

भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें तथा उसमें देश के विभिन्न दुर्गों तथा महलों के स्थानों को अंकित करें। इस पैकेज में दिए गए दुर्गों तथा महलों के चित्रों के स्थानों को खोजिए।

देश के दुर्गों तथा महलों का अध्ययन कर उनका निर्माण करवाने वाले राजाओं के बारे में जानकारी एकत्रित करें। इन इमारतों की तारीखों तथा उनके प्रयोग के उद्देश्यों को खोजिए। निम्नलिखित जानकारी एकत्रित करें :

– भवन के क्षेत्र विशेष की जलवायु।

– प्राकृतिक परिवेश, नदियां, पर्वत शृंखलाएं तथा पेड़-पौधे।

– इन किलों को बनाने तथा उनमें रहने वाले लोग, उनका व्यवसाय आदि।

– उस काल का संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्प कला आदि।

– क्षेत्र विशेष के रीति-रिवाज, मनाए जाने वाले त्यौहार तथा जुड़ी हुई पौराणिक कथाएं।

– पैकेज में दिए गए चित्रों को देखकर उनके रेखा-चित्र बनाएं।

मध्यकाल के यात्रियों/इतिहासकारों/कलाकारों ने इन पैकेजों में दर्ज़ दुर्गों व महलों को देखा तथा उनके द्वारा लिखित वृतांत व संस्मरण हमें प्राप्त होते हैं, जिनमें रेखाचित्र भी हैं। इन वृत्तांतों, संस्मरणों व रेखाचित्रों को एकत्रित कर उनमें वर्णित इन स्थानों का शैलीगत वर्णन तथा स्थानों के नामों के उच्चारणों व आसपास के स्थानों को जानिए।

विभिन्न दुर्गों की धरातलीय योजनाओं को एकत्रित कर उनका अध्ययन कर के उनकी समानताएं खोजिए। अपने घर, स्कूल या कॉलेज की योजना तैयार कर उसमें खिड़कियों तथा दरवाजों की वास्तुकला के विवरण को भी दर्शाएं।

धार्मिक स्वरूप को समझना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर एवं संपूर्ण जीवन जिएं। इन सभी धर्मों का बाह्य रूप, जैसे कि अनुष्ठान तथा प्रथाएं, प्रायः ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारणों से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है। कई धार्मिक रीति-रिवाज एवं समारोह वार्षिक कृषि चक्र से जुड़े होते हैं तथा वे जीवन के आनंद को व्यक्त करते हैं। प्रायः हर काल के धार्मिक विश्वासों ने अपने युग के वास्तुकारों, शिल्पकारों एवं चित्रकारों को प्रभावित किया है और इसी से प्रेरित होकर उन्होंने उस धर्म से संबंधित विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सुंदर स्मारकों की रचना की है।

अध्यापकगण अपने छात्रों को भारत के लोगों एवं उनके विभिन्न धर्मों को अध्ययन करने को कहें। साथ ही उनसे हिंदू, ईसाई, बौद्ध, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि हर धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए भी कहें।

The 24 pictures provided in this package can be displayed in the classroom or any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard with the title and description in regional languages. It can also be studied indepth with activities that bring out the educational value of Indian art. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring 'students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below :

In a large outline map of India, mark the sites of various forts and palaces of our country. Find out the location of the forts and palaces given in the pictures in this package.

Make a study of the forts and palaces in India and collect information of the kings, emperors who built these forts and palaces. Find out the dates of these monuments and the purpose for which they were used. Collect the following information :

— Climate of the location of the building.

— Natural surroundings, rivers, mountain range and the flora and fauna.

— People, who built and lived in these forts, their occupation, etc.

— Music, dance, drama, craft, etc. of the period.

— Customs, festivals celebrated in the region and the myths associated.

— Make a sketch/rough outline of the monuments from the pictures provided in the cultural package.

The forts and palaces mentioned in this package were visited by a number of travellers/historians/artists in the medieval period of Indian history and these people have left a vivid and interesting account of these monuments including the drawings/sketches. Collect such travelogues/memoirs/sketches. Notice interesting details in these travelogues such as the style of description, pronunciation of places and the surrounding areas of monuments of that period.

Collect and study the various ground plans of different forts and find out the similarities. Similar studies of ground plans can also be made of your school, home or college showing windows, doors and other architectural details.

Understanding Religious Concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geo-physical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with the annual agricultural cycle and celebrations of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors and painters of the by-gone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

वास्तुकला पर उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के दुर्गों का उल्लेख मिलता है। दुर्ग अथवा किला सभी दिशाओं से सुदृढ़ एवं आरक्षित भवन को कहते हैं, जिसके दायरे में कभी-कभी सम्पूर्ण शहर बसा होता है। इन ग्रंथों में गिरि, भू, जल अथवा द्वीपीय दुर्गों के साथ वन्य एवं मरु दुर्गों आदि का उल्लेख आता है।

छात्रों हेतु उनके अंचल के विभिन्न दुर्गों का एक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया जा सकता है अथवा उन्हें क्षेत्र विशेष की वास्तुकला के इतिहास तथा विभिन्न प्रकार के दुर्गों के अध्ययन हेतु कहें।

देश के विभिन्न दुर्गों तथा महलों के ऐतिहासिक विकास पर कार्य-योजना बनाएं।

दुर्गों तथा महलों की वास्तुकला से संबंधित तकनीकी शब्दों की पुस्तिका बनाएं तथा उसमें उनका अर्थ भी लिखें, जैसे कि बुर्ज, परकोटा, उत्थापन, मुंडेर आदि।

देश के विभिन्न दुर्गों एवं महलों के नामकरण के बारे में जानकारी एकत्रित कर उनके नामकरण पर कहानी लिखें।

कल्पना करें कि आप मध्यकाल के दौरान किले में रहते थे। ऐसी स्थिति में जन-साधारण, शासक तथा वास्तुकार के रूप में अपने जीवन के बारे में लिखें।

किसी दुर्ग या महल निर्माण से संबंधित घटना को नाटकीय रूप प्रदान कर उस समय विशेष के संगीत से अलंकृत करें।

विभिन्न दुर्गों तथा महलों को दर्शाने वाली एक पुस्तिका तैयार करें, जिसमें उनसे संबंधित सभी महत्वपूर्ण वर्णन हो। इस कार्य के लिए, आप पैकेज में दिए गए चित्रों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

दुर्गों एवं महलों के बारे में प्राचीन पुस्तकों में से संदर्भ-सामग्री तथा सूक्तियों का संग्रह करें।

विभिन्न क्षेत्रों की वास्तुकला से संबंधित अनुष्ठानों के संदर्भ तथा चित्र संग्रहीत करें।

देश में सुंदर दुर्ग तथा महल बनवाने वाले राजाओं एवं महत्वपूर्ण राजवंशों के बारे में कहानियां लिखें।

अपने देश के विभिन्न किलों का अध्ययन कर उन्हें नीचे दी जा रही श्रेणियों के अनुसार सूचीबद्ध करें :

- प्राकृतिक दुर्ग
- द्वीपीय दुर्ग
- मरु दुर्ग
- गिरि दुर्ग
- सपाट भूमि वाले दुर्ग।

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

Ancient texts on architecture describe a variety of forts. *Durg* or fort is a fortified building which many times encompasses whole cities within its walls. In these texts, there is mention of land, hill, water or island and also forest and desert forts.

Students can be taken on educational tours to nearby forts or asked to study the history of architecture of a specific region.

Conduct a Project on the historical development of forts and palaces in our country.

Make a booklet of the terms associated with the architecture of forts and palaces with their meaning. Some terms like turret design, elevation, battlement, rampart, parapet, etc. can be included.

Find out all that you can know about the names of different forts and palaces of our country and write a story how these were named.

Imagine you lived in the fort in the medieval times and describe your life as an architect, emperor, common man.

Dramatise the events involved in the construction of the fort or a palace and enrich with music of the period.

Make a scrap book displaying different forts and palaces with important descriptions. You may choose pictures from this package also.

Collect reference/quotations from ancient books on forts and palaces.

Collect pictures and references of the rituals connected with the architecture in different regions.

Write stories of important dynasties, emperors who built beautiful forts and palaces in our country.

Conduct a study of various forts in our country and categorize these monuments as per the following :

- Natural Fort
- Island Fort
- Desert Fort
- Mountain Fort
- Land Fort

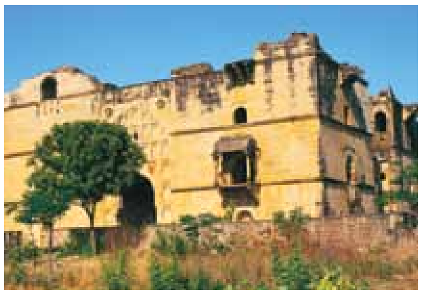

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

1. ग्वालियर दुर्ग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

यह दुर्ग एक सपाट शिखर, उठानयुक्त किनारों और एकाकी बलुआ पत्थर की पहाड़ी पर स्थित है। यह लंबी एवं संकरी पहाड़ी आस-पास के समतल मैदानों से लगभग 300 फुट ऊँचाई तक जाती है तथा उत्तर से दक्षिण तक लगभग 3 कि. मी. लम्बी एवं पूर्व से पश्चिम तक लगभग 600 से 2800 फुट चौड़ी है। पहाड़ी के किनारों पर पलस्तर किया हुआ है, ताकि दुर्ग की दीवार पहाड़ी के किनारे से ही निकलती हुई सी प्रतीत हो।

योजना के अनुसार उप-महाद्वीप के उत्तर-दक्षिणी मार्ग पर स्थित ग्वालियर दुर्ग, भारत के अत्यन्त प्राचीन दुर्गों में से एक है। इसकी नींव तीसरी शताब्दी ईसवी में रखी गई थी। हूण राजवंश के एक शासक, मिहिरगुला के राज्यकाल में 5वीं शताब्दी ईसवी के दौरान दुर्ग के अहाते में सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया था। 950 ईसवी में सूरज पाल द्वारा यहां पर हिन्दू राजवंश की स्थापना की गई। जब 1129 ईसवी में यह राजवंश समाप्त हो गया तो इसके पश्चात् प्रतिहार राजवंश आया, जिसके पास यह दुर्ग 1232 ईसवी में दिल्ली के सम्राट इल्तुतमिश द्वारा कब्जा किए जाने तक रहा। 1398 ईसवी में तोमर राजपूत, वीर सिंह देव, तैमूर के आक्रमण से उत्पन्न अशांति का लाभ लेकर ग्वालियर के राजा बन गए तथा यहां उन्होंने तोमर वंश स्थापित किया। मान सिंह 1486 ईसवी में राजा बने, जो तोमर शासकों में महानतम थे। मान सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके बेटे विक्रमादित्य ने 1518 ईसवी तक ग्वालियर पर अपना नियंत्रण रखा। इब्राहिम लोदी ने सफलतापूर्वक दो वर्ष की घेराबन्दी को समाप्त कर दिल्ली सल्तनत के लिए इस दुर्ग को जीत लिया। 18वीं शताब्दी ईसवी के मध्य तक यह दुर्ग मुगलों के अधीन रहा, और उनके बाद मराठों ने 1754 ईसवी में इसे अपने अधिकार में ले लिया।

आगामी 50 वर्षों तक यह दुर्ग विभिन्न राजवंशों के आक्रमण सहता रहा। तत्पश्चात् इस पर सिंधिया राजवंश ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इतने लंबे और विविधतापूर्ण इतिहास के दौरान इस दुर्ग के अन्दर तथा नीचे की ओर, महलों व मंदिरों सहित अनेक इमारतें बनाई गईं, जिनमें मानसिंह महल, गूजरी महल, सास-बहू का मंदिर तथा तेली का मंदिर शामिल है। यह विशाल गिरिदुर्ग चारों ओर से एक चौड़ी व गहरी खाई से घिरा हुआ था, जिसे 'सुवर्ण-रेखा नाला' कहा जाता था। मूलत: दुर्ग के सात प्रवेश द्वार थे, जिनमें से वर्तमान में केवल पांच विद्यमान हैं– आलमगीर दरवाजा, हिंडोला दरवाजा, गणेश दरवाज़ा, लक्ष्मण दरवाज़ा तथा हाथी दरवाज़ा।

1. Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

The fortress stands on a flat-topped, sheer-sided and isolated sandstone hill. The hill rises up to 300 ft. above the surrounding plains, and is long and narrow, measuring approximately 3 kms. from north to south and from 600 to 2800 ft., east to west. The sides of the hill are revetted so that the fort wall seems to grow out of the hillside.

Gwalior Fort, strategically located on the main north-south route through the sub-continent, is one of the most ancient forts of India. Its foundation was laid in the 3rd century A.D. During the 5th century A.D. under the reign of Mihirgula, one of the rulers of Hun dynasty, Sun Temple was erected in the premises of the fort. In 950 A.D., a Hindu dynasty was founded there by Suraj Pal. When this became extinct in 1129 A.D., it was followed by the Pratihara dynasty, which held the citadel until it was captured by the Delhi emperor Iltutmish in 1232 A.D. In 1398 A.D, Bir Singh Deo, a Tomar Rajput, took advantage of the turmoil caused by Timur's invasion. He became the king of Gwalior and established the Tomar dynasty there. Man Singh who came to power in 1486 A.D., was the greatest of the Tomar ruler. After his death, his son Vikramaditya controlled Gwalior until 1518 A.D. Ibrahim Lodi successfully concluded a two year siege and won back the fortress for the Delhi Sultanate. The Mughals held the fort till the mid-18th century A.D. until the Marathas conquered it in 1754 A.D.

For the next 50 years, the fort was invaded by different dynasties till it was taken over by the Scindias. During this long and varied history, many buildings were erected in or below the fortress, including palaces and temples which include Man Singh Palace, Gujari Mahal, Saas-Bahu Temple and Teli ka Mandir. This huge hill-fort is surrounded by a wide deep moat called *Suvarna-Rekha Nallah.* Originally, the fortress had seven entrances, of which only five are there, they are Alamgir Gate, Hindola Gate, Ganesh Gate, Lakshman Gate and Elephant Gate.

2. मान सिंह महल (भीतरी दृश्य), ग्वालियर दुर्ग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

मान सिंह महल, ग्वालियर दुर्ग के प्रवेश द्वार की भाँति है, जो कि सुन्दर खपरैलों तथा बत्तखों, हाथियों व मोरों के नमूनों के चित्रित अलंकरणों सहित एक शानदार इमारत है। यह महल राजा मान सिंह द्वारा 1486 से 1516 ईसवी के बीच बनाया गया।

इसे मध्यकालीन भारत के हिन्दू वास्तुकला के एक उत्कृष्ट और रुचिकर उदाहरण के रूप में वर्णित किया जाता है। महल के पूर्वी भाग में, इसकी दो मंजिलें ऊपर की ओर तथा दो भूतल के नीचे हैं। खड़ी चट्टान के किनारे पर यह महल बना हुआ है तथा इसमें मीनारों और मूलतः मुलम्मा चढ़े तांबे से आवरणित गुम्बदयुक्त छतरियों की श्रृंखला है। अंदर की ओर विशाल कक्ष - मान मंदिर और विक्रम मंदिर हैं, जिनका उपयोग संगीत सभागृहों के रूप में किया जाता था तथा जहां पर उत्कृष्ट जाली कार्य से युक्त पर्दों के पीछे बैठकर राजसी महिलाएं उस समय के महान संगीतज्ञों से संगीत सीखती थीं। ये कक्ष अनेकानेक कमरों से घिरे हैं, जिनकी छतें विस्तारित रूप से अलंकृत हैं।

मान मंदिर के द्वार-स्तंभ विशाल हैं तथा लहरदार ओरियों को दीवारगीरों की कतारों द्वारा आधार प्रदान किया गया है।

2. Man Singh Palace (Inside view), Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

The Man Singh Palace which forms the entrance to the Gwalior Fort is a beautiful building with tiled and painted decoration of ducks, elephants and peacocks. The palace was built by Raja Man Singh between 1486 and 1516 A.D.

It is described as a remarkable and interesting example of Hindu architecture of the medieval India. It has two storeys above and two below the ground level in the eastern part of the palace. It is built on the edge of the cliff, with a series of towers and domed cupolas originally covered with gilt copper. In the interior, there are vast chambers - Man Mandir and Vikram Mandir, which were used as music halls, where behind the fine lattice-work screens, royal ladies used to learn music from the great masters of the day. These chambers are surrounded by several rooms with elaborately decorated ceilings.

The pillars of the gateways of Man Mandir are massive and a line of brackets support the corrugated eaves.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

3. गूजरी महल, ग्वालियर दुर्ग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

मध्यकालीन वास्तुकला की अद्‌भुत प्रस्तुतियों में एक, गूजरी महल 1510 ईसवी में राजा मानसिंह द्वारा अपनी प्रिय रानी मृगनयनी की याद में बनवाया गया। यह महल ग्वालियर दुर्ग के अहाते में है।

बड़े प्रांगण के आसपास बने आंतरिक भाग सहित कलात्मकता से परिपूर्ण चिनाई करके बनाई गई यह दो मंज़िली इमारत सांचे में ढाले गए अलंकरणों के समूहों और उत्कीर्णित दीवारगीरों सहित छोटे कक्षों से घिरी है। इसका आंतरिक भाग पुरातत्व संग्रहालय में परिवर्तित हो गया है, जिसमें हिन्दू व जैन शिल्पकला, अभिलेखों व चित्रकृतियों का उत्कृष्ट संग्रह है। इसमें प्रदर्शित वृक्ष देवी शालभंजिका की प्रतिमा ग्यारासपुर से लाई गई है।

3. Gujari Mahal, Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

One of the marvels of the medieval architecture, Gujari Mahal is situated in the premises of the Gwalior Fort. It was built by Raja Man Singh in 1510 A.D. for his wife, Mrignayani.

Gujari Mahal, a two storey masonry building of the artistry with interior portion set around spacious courtyard, is surrounded by small rooms with carved brackets and bands of moulded ornaments. Its interior portion has been converted into an archaeological museum having outstanding collection of Hindu and Jain sculptures, inscriptions and paintings. One of the statue kept there is of the tree goddess, Salabhanjika, brought from Gyraspur.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

4. जय विलास महल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

जय विलास महल ग्वालियर के अनेक प्रसिद्ध महलों में से एक है। यह महाराजा जयाजी राव द्वारा 1872 से 1874 ईसवी के बीच निर्मित एक शानदार महल है। सन् 1857 में आज़ादी की पहली लड़ाई के पश्चात्, सिंधिया राजवंश को ग्वालियर शहर पर शासन करने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ। जय विलास महल में देशी विशेषताओं सहित तुस्कन व कोरिंथियाई वास्तुकला की मिश्रित शैली दिखाई देती है।

इस महल के प्रमुख वास्तुकार ले. कर्नल सर माइकेल फिलोस ने प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन हेतु दो वर्ष में ही इस पूरे महल का निर्माण किया था। जय विलास महल का प्रमुख प्रवेश, दक्षिणी अग्रभाग के केन्द्र के पूर्व व पश्चिम में स्थित छतदार द्वार-मंडपों से हो कर है। दरबार हॉल 15 मी. × 85 मी. का माप लिए है, जिसकी छत 12 मी. से भी अधिक ऊंची है। इसमें एक विशाल दीपाधारों का जोड़ा है, जिनमें से प्रत्येक में 248 चिराग है। इनकी ऊंचाई 42 फुट व वजन लगभग 3 टन है। ये विश्व के विशालतम दीपाधारों में से एक हैं। महल में सोने के रंगलेप युक्त कांच का फर्नीचर तथा अतिथियों को पेय आदि देने हेतु एक चांदी की खिलौना रेलगाड़ी सहित एक विशाल खाने की मेज़, भारतीय तथा इतालवी शिलप्कारों की कारीगरी की मिश्रित शैली को दर्शाती है।

वर्तमान में, यह महल सिंधिया परिवार का निवास स्थान है। इस महल के एक भाग को संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, जो हमें शासकों की राजसी जीवन-शैली के बारे में बताता है और बीते समय की याद को ताज़ा करता है।

4. Jai Vilas Palace, Gwalior, Madhya Pradesh

One of the fabulous palaces in Gwalior is Jal Vilas Palace. It is a magnificent city palace built by Maharaja Jayaji Rao between 1872 and 1874 A.D. After the first war of independence in 1857 A.D., the Scindias had the privilege of holding sway over the town of Gwalior. The Jai Vilas Palace reflects a mixed style of architecture i.e. Tuscan and Corinthian along with indigenous features.

It’s chief architect Lt. Col. Sir Michael Filose, built the entire palace in a short span of two years for the forthcoming visit of Prince of Wales. The main entrances of Jai Vilas Palace are through covered porticos on the east and west of the centre of the South facade. The Durbar Hall measures 15 m. by 85 m. with the roof over 12 m. high. It has a pair of huge chandeliers with 248 candles apiece, each is 42 ft. high and weighs about 3 tons, one of the largest in the world. The glass furniture, with a lot of gold paint, and a huge dining table with a silver toy train used to serve drinks to the guests, reflect a synthesis of Italian and Indian craftsmanship.

At present, the palace is the residence of the Scindias. A portion of the palace has been converted into museum which indicates the royal lifestyle of the rulers and takes us back down the memory lane.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

5. जहाँगीर महल, ओरछा, मध्य प्रदेश

बुंदेला राजवंश द्वारा 16वीं शताब्दी ईसवी में शासित, ओरछा अपने शानदार महलों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें से एक है–जहाँगीर महल, जिसे ओरछा के सुलतान राम सिंह के छोटे भाई, बीर सिंह देव द्वारा 17वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित किया गया। मुगल सम्राट अकबर की मृत्यु के पश्चात् 1605 ईसवी में जहांगीर द्वारा बीर सिंह देव को ओरछा का राज्य प्रदान किया गया था। बीर सिंह देव, अबुल फज़ल की मृत्यु में सहायक था। उसकी वास्तुकलात्मक विशेषता में हिन्दू व मुस्लिम शैली का मिश्रण दिखाई देता है।

छज्जों से युक्त छतरियों तथा आठ गुम्बदों से आच्छादित पांच मंज़िला जहाँगीर महल बेतवा नदी के किनारे पर स्थित है। इसके मुख्य प्रवेश स्थान पर हाथियों का एक जोड़ा पार्श्व में है और इसका संपूर्ण ढांचा बलुआ पत्थर से उत्कीर्णित है। दक्षिणी अग्रभाग में एक द्वारमार्ग सभागृह से होते हुए एक खुले चतुष्कोण की ओर जाता है, जिसमें एक केन्द्रीय फव्वारा है तथा जिसके आसपास तीन मंज़िलों की पंक्ति में व्यवस्थित कमरे व छज्जे हैं। कमरों के समूहों के बीच पार्श्विक सम्पर्क, चौड़ी ओरियों से संरक्षित लटकते छज्जों से होते हुए बाहरी दीवारों और जाली-कार्य से युक्त आवरणों से सुसज्जित खिड़कियों के समानान्तर हैं।

मुगल शैली में बनाए गए बाग की परिकल्पना चार बाग के आधार पर की गई है तथा इसमें व्यवस्थित रूप से निर्मित बाग व शीतल नहरे हैं, जो इस चित्र में दिखाई नहीं पड़ रहे हैं।

5. Jahangir Mahal, Orchha, Madhya Pradesh

Orchha, ruled by Bundelas in the 16th century A.D., is known for magnificent palaces. One of them is Jahangir Mahal built in the 17th century A.D. by Bir Singh Deo, younger brother of Ram Singh, Sultan of Orchha. Bir Singh Deo, instrumental in the death of Abu-I-Fazl, was awarded the kingship of Orchha by Jahangir in 1605 A.D., after the death of Akbar, the Mughal emperor. In his architectural feast, one can see the synthesis of Hindu and Muslim style of architecture.

Jahangir Mahal, built in five receding storeys surmounted by eight domes and covered balconies, stands along the banks of the Betwa river. A pair of elephants are flanked at the main entrance and the whole structure is carved of sandstone. A doorway in the southern facade leads through a hall to open quadrangle containing a central fountain around which are arranged the apartments and terraces in the three storey ranges. Lateral communication between the suites of rooms is through hanging balconies protected by wide eaves which run along the outer walls and windows decorated with *jali*-work screens.

The garden (not in the picture) is designed on the Char Bagh pattern with well laid out lawns and cool canals.

6. कालियादह महल, उज्जैन, मध्य प्रदेश

मालवा के तीसरे खिलजी सुलतान नसीर शाह ने 15वीं शताब्दी ईसवी में उज्जैन से छह मील उत्तर में कालियादह महल का निर्माण किया। यह महल क्षिप्रा नदी के एक द्वीप पर स्थित है।

कालियादह महल में एक केन्द्रीय सभागार है, जिसके चारों ओर वीथिकाएं हैं। इस ग्रीष्म सैरगाह की उत्कृष्ट विशेषता, सुन्दर आकारों में बनी नहरों से होकर नदी के जल का अनेकानेक कुण्डों में पहुंच कर शिल्पात्मक पाषाणों पर गिरना है। कृत्रिम जलप्रपात एक पतले फलक पर फैल जाता है, जहां से जल वापस क्षिप्रा नदी में चला जाता है। जल लगभग 20 फुट की ऊंचाई से गिरता है। इस प्रणाली द्वारा ईंट-पत्थर की चिनाईयुक्त चबूतरे पर बने कक्षों को शीतल रखा जाता है।

6. Kaliadeh Mahal, Ujjain, Madhya Pradesh

Kaliadeh Mahal, which is situated about six miles north of Ujjain city was built by Nasir Shah, the third Khalji Sultan of Malwa in 15th century A.D. The Kaliadeh Mahal is situated on an island of Kshipra river.

Kaliadeh Mahal has a central hall with galleries on all four sides. The remarkable feature of this summer resort is the system by which the water of the river is carried through decorated conduits into several tanks and then allowed to fall from a height of about 20 ft. over sculptured stone curtains. The artificial waterfall is spread into a thin sheet and falls back into the Kshipra river. In this way the chambers built on the masonry platform were kept cool.

7. हिंडोला महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

दिल्ली पर 1398 ईसवी में तैमूर के आक्रमण के पश्चात् तुगलक वंश समाप्त हो गया। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए 1401 ईसवी में धार के गवर्नर दिलावर खान ग़ौरी, जो मूलत: अफ़गानिस्तान का रहने वाला था, ने स्वयं को धार का सुलतान घोषित कर दिया। उसके बेटे होशंग शाह ने 1405 ईसवी में उत्तराधिकार में राज्य प्राप्त किया और अपनी राजधानी को स्थाई रूप से माण्डू स्थानांतरित कर दिया।

अपनी ढालू या तिरछी बनी दीवारों के कारण झूलते महल के नाम से भी प्रसिद्ध हिंडोला महल 1425 ईसवी में बनाया गया था। इसकी शुण्डाकार दीवारें लगभग 77 डिग्री की ढलान लिए हुए हैं। यह पूरी इमारत अंग्रेजी वर्णमाला के 'टी' के आकार की हैं तथा इसका आयताकार भाग सभागार और अर्गला (क्रॉस बार) भाग राजसी कमरों के रूप में है। सभागार 110 फुट लंबा, 60 फुट चौड़ा तथा 35 फुट ऊँचा है, जिसमें अनुप्रस्थ मेहराबों सहित एक विशाल कक्ष के आसपास अनेकानेक तोरण पथ हैं, जिनके ऊपर एक वीथिका बनी हुई है। दुमंज़िले राजसी कक्ष, कलात्मक परिकल्पना ली हुई झरोखा रूपी खिड़कियों सहित बने हुए थे तथा ये बलुआ पत्थर में महीन जाली के कार्य से समृद्ध हैं। यह संपूर्ण इमारत एक ठोस मजबूती का आभास देती है।

7. Hindola Mahal, Mandu, Madhya Pradesh

The Tughlaq dynasty came to an end after. Timur's invasion of Delhi in 1398 A.D. Taking advantage of the situation, in 1401 A.D., the Governor of Dhar, Dilawar Khan Ghori, originally from Afghanistan, declared himself as Sultan of Dhar. His son, Hoshang Shah succeeded him in 1405 A.D. and shifted the capital to Mandu permanently.

Hindola Mahal, built in 1425 A.D., is also known as Swinging Palace due to its sloping sidewalls. The tapering walls slope at approximately 77 degrees. The whole building is 'T' shaped with the oblong portion forming an audience hall and the cross-bar portion, the royal apartments. The audience hall is 110 ft. long, 60 ft. wide and 35 ft. high, with several arcades around a huge room framed with transverse arches and overlooked by a gallery. The royal apartments were built in two storeys with projected windows artistically designed which are enriched with an ornamental facade with delicate *jali* work in sandstone. The whole edifice gives an impression of massive solidity.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

8. जहाज़ महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

राजा होशंग शाह के पुत्र को उसके तुर्क मंत्री, महमूद खान खिलजी ने 1436 ईसवी में ज़हर दे दिया और मध्य भारत में ख़िलजी वंश की स्थापना की। उसने 15वीं शताब्दी ईसवी के उत्तरार्द्ध में अपनी रानियों के लिए जहाज़ महल का निर्माण किया।

अपने नाम के अनुरूप जहाज़ महल, मुंज तालाब तथा कपूर तालाब नामक दो कृत्रिम झीलों के बीच स्थित है, जो दूर से देखने पर एक जहाज़ के समान प्रतीत होता है। यह संपूर्ण इमारत अत्यंत विशाल है और लगभग 100 मी. लंबी तथा 15 मी. चौड़ी है।

इसके आच्छादित भूतल के ऊपर की ओर एक चौड़ी ओरी है और सीढ़ियों की एक चौड़ी पंक्ति खुली छत की ओर जाती है। भूतल में, सुन्दर स्नानागार तथा फव्वारों से युक्त राजसी प्रांगण सहित तीन विशाल कक्ष हैं, जबकि छत के ऊपर मंडप, छतरियां तथा गुम्बज हैं। जहाज़ महल का मुंज तालाब व कपूर तालाब में दिखने वाला प्रतिबिंब दर्शकों पर एक जादुई प्रभाव डालता है। आन्तरिक चित्र में आप जहाज़ महल के पीछे का हिस्सा देख सकते हैं।

8. Jahaz Mahal, Mandu, Madhya Pradesh

Mahmud Khan Khalji, a Turk minister to Hoshang Shah's son, poisoned him in 1436 A.D. and established the Khalji dynasty in Central India. He built Jahaz Mahal in late 15th century A.D. for his queens.

True to its name, Jahaz Mahal, situated between two artificial lakes, Munja Talao and Kapur Talao, resembles a ship from a distance. The whole edifice is massive and measures about 100 m. by 15 m.

It has an arcaded ground storey with a broad eave above and a wide flight of steps leading to a roof terrace. On the ground floor, there are three large halls with a beautiful bathing courtyard, luxurious fountain courts, while on the rooftop are pavilions, kiosks and cupolas. Its reflection in the Munja and Kapur Talao has a magical effect on the viewers. In the inset picture, one can see the back side view of Jahaz Mahal.

9. अशरफ़ी महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

महमूद खान खिलजी द्वारा 15वीं शताब्दी ईसवी में बनवाया गया अशरफ़ी महल जामी मस्ज़िद के ठीक सामने स्थित है। इस इमारत की कल्पना मूलतः इस्लामी विद्वानों के लिए मदरसा के रूप में की गई थी। अब यह इमारत जीण- शीर्ण अवस्था में है। इसकी दीवारों का निर्माण कामचलाऊ ढंग से तैयार किए गए अनगढ़े पत्थरों से किया गया था, क्योंकि अधिक ध्यान इसकी सतह के खूबसूरत प्रस्तुतीकरण पर दिया गया था। कांच चढ़ाने की फ़ारसी तकनीक को मुलतान से अपनाया गया, जिसे इस महल की चमकदार रंग से युक्त गुम्बदयुक्त संरचना में देखा जा सकता है।

15वीं शताब्दी ईसवी में चित्तौड़ के राणा कुम्भा पर अपनी विजय के प्रतीक स्वरूप महमूद खान खिलजी ने एक सात मंज़िली मीनार बनवाई थी, जो अब ढह चुकी है।

मदरसा की छत पर 1450 ईसवी में एक शाही मक़बरा निर्मित किया गया। इस मक़बरे को 27 फुट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित किया गया था। सीढ़ियों की एक पंक्ति स्तम्भयुक्त द्वार-मंडप की ओर जाती है, जिसमें प्रत्येक ओर शीर्ष पर एक विशाल गुम्बद से युक्त छत्ते हैं। आन्तरिक चित्र में आप जामी मस्ज़िद को देख सकते हैं।

9. Ashrafi Mahal, Mandu, Madhya Pradesh

Ashrafi Mahal, built by Mahmud Khan Khalji in 15th century A.D., is situated just opposite the Jami Masjid. Originally conceived as a *madrassa* for Islamic scholars, it is now lying in ruins. Its walls were constructed of roughly prepared rubble as much attention was paid on its colourful surface treatment. The Persian art of glazing was borrowed from Multan and can be seen in this brilliantly coloured domed structure.

In 15th century A.D., a seven storeyed Tower of Victory was built by Mahmud Khan Khalji to commemmorate his victory over Rana Kumbha of Chittor, which has since collapsed.

In 1450 A.D., an imperial mausoleum was built upon the terrace of the *madrassa*. It was raised on a 27 ft. high plinth. A flight of steps lead to a pillared portico with loggias on each side topped by an immense dome. In the inset picture one can see the Jami Masjid.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

10. बाज़ बहादुर महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

1509 ईसवी में निर्मित बाज़ बहादुर महल, कवि-राजकुमार बाज़ बहादुर की अपनी सुन्दर पत्नी, रानी रूपमती के प्रति प्रेम की कल्पित कथा की एक अभिव्यक्ति है।

मूलतः एक सेना प्रेक्षण चौकी के रूप में इस भवन का निर्माण किया गया था। इसकी विशेषता चारों ओर सभागारों सहित विस्तृत खुला प्रांगण है। रानी रूपमती का मण्डप, ऊपर की ओर खुला एकान्त स्थान था, जहां से वह नर्मदा नदी को नीचे की ओर निमाड़ के मैदान से होकर बहते हुए देख सकती थी।

महल के निचले भाग में रेवा कुण्ड है, जिसका जल स्रोत नर्मदा नदी से था, जो एक समय में महल में रहने वाले लोगो की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। आज भी इस कुण्ड को लोगों द्वारा पवित्र माना जाता है।

10. Baz Bahadur Palace, Mandu, Madhya Pradesh

Baz Bahadur Palace, built in 1509 A.D., is a manifestation of the legendary tale of love of the poet-prince Baz Bahadur for his beautiful wife, Rani Roopmati.

Originally built as an army observation post, its unique features are its spacious open court with halls and rooms on all four sides. The Roopmati's pavilion, open at the top was a retreat of the lovely queen, from where she could see the river Narmada flowing through the Nimar plains far below.

At the foot of the palace is Rewa Kund, a reservoir fed by river Narmada, fulfilling the needs of the people living in the palace. Till date, the pool is considered sacred by the people.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

11. पन्ना महल, पन्ना, मध्य प्रदेश

हीरों की नगरी, पन्ना एक सुव्यवस्थित नगर है, जहां मूलतः बुंदेल निवास करते थे। एक अंग्रेजी वास्तुकार ने 1886 ईसवी में रुद्र प्रताप सिंह के लिए पन्ना महल की परिकल्पना की थी।

चौड़ी सीढ़ियों के उत्कीर्ण प्रकारों से अंकित पंक्ति लंबी धारियों से युक्त स्तंभों वाले अग्रभाग, कोरिथियाई शीर्षों, त्रिकोणीय द्वारमार्गों और आच्छादित गलियारे में विस्तृत मरगोल कार्य की ओर ले जाती है। यद्यपि प्रमुख रूप से यह महल रोम की वास्तु शैली में बना है, फिर भी इसमें कुछ भारतीय विशेषताएं भी हैं, जैसे एकैन्थस की पत्तियों के स्थान पर कोरिंथियाई शीर्षों के आसपास कमल की पत्तियां देखी जा सकती हैं।

महल के अग्रभाग तथा पीछे के भाग में एक विशिष्ट विषमता देखी जा सकती है। आगे के भाग में यूरोपीय अतिथियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए परिकल्पित कक्ष हैं और पीछे के भाग (आन्तरिक चित्र) में ज़नाना, पवित्र कुण्ड, ग्रीष्म मण्डप तथा सेवकों के निवास हैं।

11. Panna Palace, Panna, Madhya Pradesh

Panna, the city of diamonds, originally inhabited by Bundelas, is a well-laid out city. In 1886 A.D., an English architect designed the Panna Palace for Rudra Pratap Singh.

A flight of wide steps delineated with carved parapets lead to the colonnaded facade, Corinthian capitals, pedimented doorways and a covered passageway enriched with elaborate scrollwork. Although predominantly Roman in style, it has certain Indian features as well, for instance one can see lotus leaves instead of acanthus leaves round the Corinthian capitals.

A marked contrast can be seen between the front and rear section of the palace. In the front, there are rooms designed to meet the needs of European guests, and the rear section (inset) houses the *zenana*, sacred tank, summer pavilion and servant quarters.

12. रीवा महल, रीवा, मध्य प्रदेश

रीवा महल, जो प्राचीन नगर महल के नाम से भी प्रसिद्ध है, वास्तुकला की दृष्टि से राजपूत तथा मुगल शैली का सम्मिश्रण है। मुगलों के आधिपत्य में मूलतः बघेला सरदारों द्वारा 16वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित इस महल में दरबार हॉल तथा स्वागत सभागार थे। बाद के वर्षों में इस महल में अन्य अनेक मंदिर, प्रांगण, स्नानागार तथा बहुत-से सभागार और गलियारे बनाए गए।

दरबार हॉल एक विशाल कक्ष है, जिसमें शाही शक्ति तथा वैभव को प्रदर्शित करते अविश्वसनीय रंगीन कांच के कार्य से युक्त सोने का मुलम्मा चढ़ी दीवारें हैं। स्वागत सभागारों में गोलाकार लंबी धारियों एवं बेल बूटों सहित स्तंभों का निचला हिस्सा चौकोर आकृति का है। स्तंभों के शीर्ष पर निर्मित तोरण, दीप आलों से सुसज्जित हैं।

12. Rewa Palace, Rewa, Madhya Pradesh

Rewa Palace also known as Old City Palace is a synthesis of Rajput and Mughal styles of architecture. Originally built by Baghela chiefs under the hegemony of Mughals in the 16th century A.D., it comprised of Durbar Hall and reception halls. In later years, many other temples, courtyards, bathing places and number of halls and passageways were added to the palace.

Durbar Hall is a vast hall with gilded walls and coloured glass work emanating imperial power and grandeur. The unique features of the reception halls are fluted columns, foliated plinths and capitals, cusped arches flanked by lamp-niches.

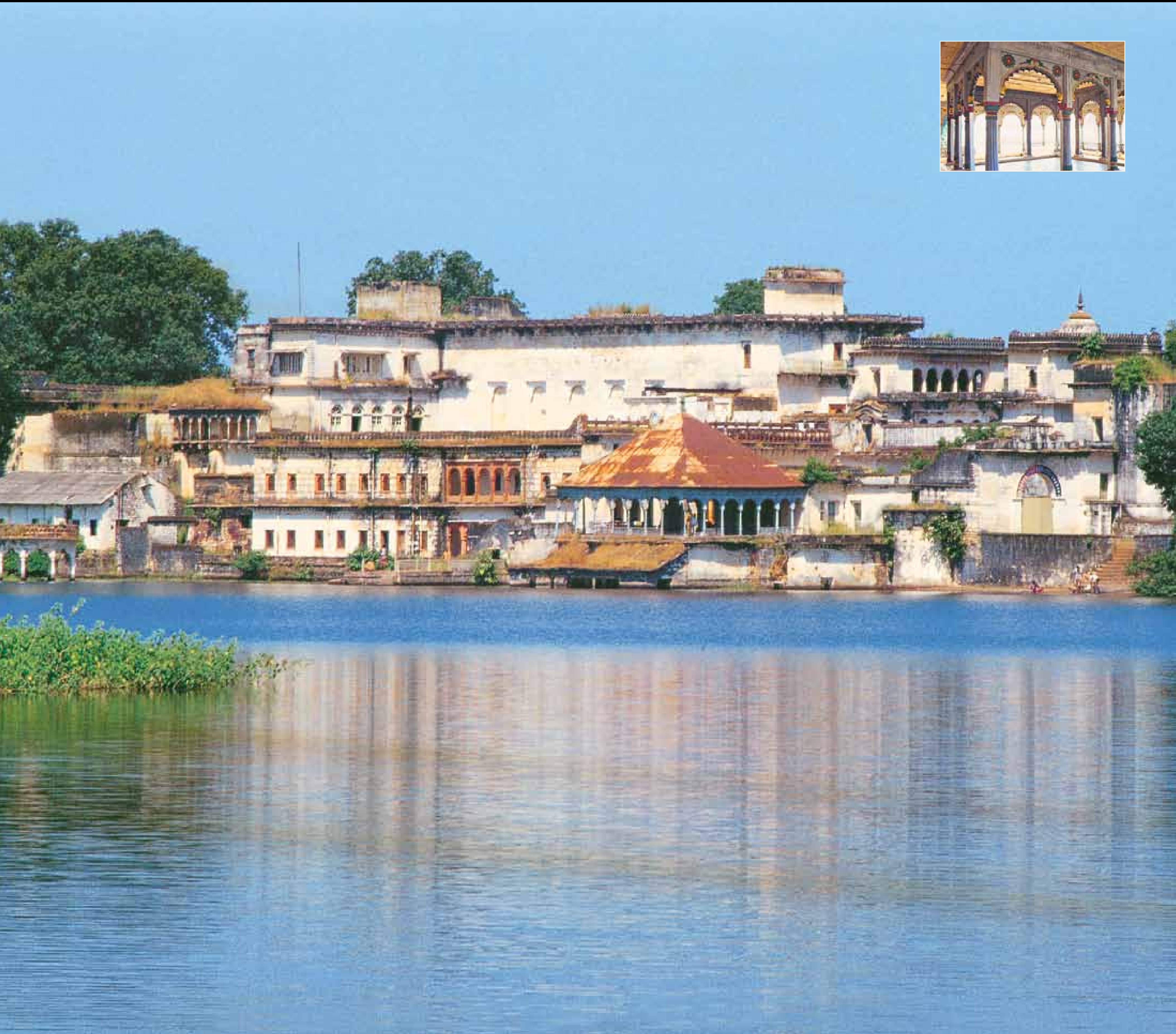

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

13. गोविन्दगढ़ महल, रीवा, मध्य प्रदेश

गोविन्दगढ़ महल रीवा नगर से 24 कि.मी. की दूरी पर है। इसे राजपूत शैली में रीवा के रघुराज सिंह के लिए शिकारगाह के रूप में निर्मित किया गया था। यह महल कच्छ वनस्पति तथा जंगल से घिरी झील के किनारे स्थित है। जिसके साथ के अहाते में विशाल चबूतरे पर एक कमलाकार मेहराब बनाई गई है। आन्तरिक चित्र में आप काठी महल देख सकते हैं।

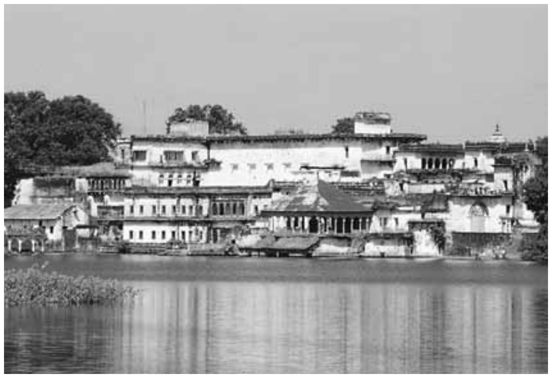

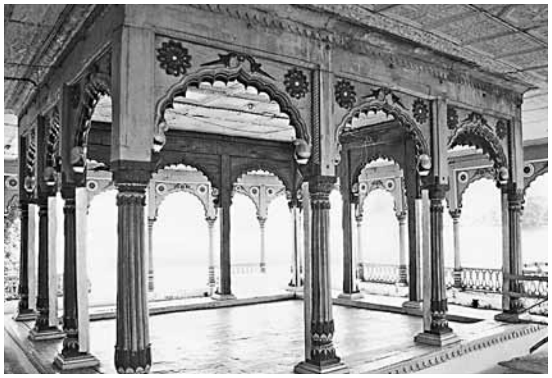

13. Govindgarh Palace, Rewa, Madhya Pradesh

Govindgarh Palace is at a distance of 24 kms. from Rewa city. It was built in Rajput style for Raghuraj Singh of Rewa as a hunting retreat. The palace situated on a lake, surrounded by mangroves and jungle, has an adjacent compound with an arch on a huge platform carved in the shape of a lotus. In the inset picture, one can see the Kathi Mahal.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

14. नृसिंह देव महल, दतिया, मध्य प्रदेश

बुन्देल सरदार, बीर सिंह देव द्वारा 1620 ईसवी में निर्मित नृसिंह देव महल, भारत की उत्कृष्टतम इमारतों में से एक है। यह पांच मंज़िला महल, 130 फुट की ऊंचाई लिए एक चट्टानी दृश्यांश पर अवस्थित है।

इस महल की वास्तु योजना चौकोर है तथा इसमें एक मंडप को दूसरे मंडप के साथ जोड़ने वाले भव्य पुलों तथा छज्जों के प्राचुर्य सहित चारों कोनों पर चार मीनारें बनी हैं। पूरा महल चारों तरफ से ओरियों, तोरण पथ, छतरियों और गुम्बजों सहित एक समेकित एकक के रूप में निर्मित है। केन्द्रीय मंडप में राजसी कक्ष हैं। दक्षिणी ओर से कर्ण सागर झील का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है। आंतरिक दृश्य में आप नृसिंह देव महल का पृष्ठभाग देख सकते हैं।

14. Nrising Dev Palace, Datia, Madhya Pradesh

Nrising Dev Palace, built in 1620 A.D. by Bir Singh Deo, Bundela chief, is one of the finest buildings in India. The five storeyed palace, 130 ft. in height, stands on a rocky outcrop.

It is square in plan, with four corner towers having a profusion of balconies and elegant bridges linking one pavilion with the other pavilion. The whole palace is symmetrically built as a single integrated unit with domes and kiosks, arcades and eaves on every side. The central pavilion contains royal apartments. On the southern side, one can have a delightful view of Karna Sagar Lake. In the inset picture, one can see the backside view of Nrising Dev Palace.

15. अजयपाल मंदिर, अजयगढ़ दुर्ग, मध्य प्रदेश

चन्देलों द्वारा 9वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित अजयगढ़ दुर्ग ग्रेनाइट के दृश्यांश पर बना हुआ है। यह दुर्ग केदार-पर्वत पर रहने वाले संत अजयपाल के नाम से है। जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होने के बावजूद आज भी अजयपाल मंदिर अत्यंत दिलचस्प स्थान है। अजयगढ़ दुर्ग के परिसर में विस्तारित रूप से उत्कीर्णित पत्थरों की पंक्ति पर पंक्ति, धीरे से ऊपर की ओर क्रमशः कम पतली होती दीखती है। दैवीय आकृतियों के उत्कीर्ण किए गए अनेक सती स्तंभ यहां देखे जा सकते हैं।

15. Ajaipala Temple, Ajaigarh Fort, Madhya Pradesh

Ajaigarh fort, buiilt by Chandellas in the 9th century A.D. is perched on a granite outcrop. The fort is named after the sage Ajaipala who lived on Kedar *parvat*. Even today, Ajaipala temple, though now in ruins, is the most interesting place. Tier upon tier of elaborately carved stones, taper gently upwards and number of *sati* pillars engraved with divine motifs can be seen in the premises of Ajaigarh fort.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

16. असीरगढ़ दुर्ग, असीरगढ़, मध्य प्रदेश

सतपुड़ा पर्वतश्रेणी के पृथक दृश्यांश पर स्थित असीरगढ़ दुर्ग को लम्बी दूरी से देखा जा सकता है। खण्डवा से दक्षिण की ओर 48 कि.मी. तथा बुरहानपुर से 20 कि.मी. उत्तर पर रणनीतिजन्य रूप से स्थित यह दुर्ग दक्षिण के प्रवेशद्वार के रूप में भी जाना जाता है।

एक चरवाहे असा अहीर द्वारा सन् 1370 ईसवी में निर्मित यह दुर्ग भारत के सर्वाधिक पुराने दुर्गों में से एक है। दुर्ग में पहुंचने के दो मुख्य रास्ते हैं – पश्चिमी तरफ सर्प कुण्डली वाला आरोही रास्ता और दक्षिण-पूर्वी तरफ, सात दरवाजों से रक्षित गोपनीय रास्ता। पश्चिमी हिस्सा पूर्णतः तीन दीवारों द्वारा सुरक्षित है। सबसे निचली सुरक्षा दीवार मलयगढ़, बीच की कमरगढ़ तथा सबसे ऊपर की दीवार असीरगढ़ कहलाती है।

दुर्ग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रमुख प्रवेशद्वार के निकट है, जहां गन टॉवर के नाम से प्रसिद्ध एक विशाल बुर्ज, दक्षिण-पश्चिम की ओर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूती देने हेतु निर्मित किया गया था। यह नुकीले कोनों वाले अनेक परकोटों से युक्त है। इस टॉवर पर बाहरी सीढ़ियों से होकर पहुंचा जा सकता है और एक नुकीले मेहराब वाले द्वारमार्ग से इसमें प्रवेश किया जा सकता है।

16. Asirgarh Fort, Asirgarh, Madhya Pradesh

Situated on an isolated outcrop of the Satpura range, Asirgarh Fort can be seen from a long distance. Strategically located 48 kms. south of Khandwa and 20 kms. north of Burhanpur. It is also regarded as an entrance gateway of Deccan.

Built by a herdsman, Asa Ahir, in 1370 A.D., it is one of the oldest forts of India. There are two main approaches to the fort–one on the 'western side, ascending in the shape of a serpentine, and second on the south-east, which used to be the secret passage at that time guarded by seven gates. The western side is well defended by three walls–the lower most defensive wall called Malaigarh, the middle one known as Kamargarh, and the top most wall is called the Asirgarh.

The most impressive site of the fort is near the main entrance where a massive bastion known as gun-tower (inset) was built to strengthen the line of defence on the south-west side. It is equipped with numerous parapet battlements with pointed tops. The top of this tower can be reached through the steps on the outside and entered through a pointed arch gateway.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

17. धार दुर्ग, धार, मध्य प्रदेश

अपने ही नाम की मूल राज्य की राजधानी धार, महू से 53 कि.मी. पश्चिम में स्थित है। घूर शासक दिलावर खान ग़ौरी के शासनकाल में 15वीं शताब्दी ईसवी में, धार में परमार शासकों की तुलना में कहीं अधिक इमारतों का निर्माण हुआ।

10वीं शताब्दी ईसवी के दौरान राजा भोज प्रथम ने धार को राजधानी बनाकर धार दुर्ग की नींव रखी। लाल पत्थर से बना यह दुर्ग चार द्वारपथों सहित एक किलेबन्द दीवार से घिरा हुआ है। यह दुर्ग 24 गोल तथा 2 चौकोर मीनारों से अलंकृत है तथा मालवा में इंडो-इस्लामी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। घूर शासकों द्वारा दिल्ली की वास्तुकला में पाई जाने वाली अनेक विशेषताओं का यहां पर भी इस्तेमाल किया गया है, जैसे खण्डित हिन्दू मंदिरों की टूटी हुई दीवारों का प्रयोग, गोलशीर्ष किनारों सहित नुकीले तोरण, तोरण-सरदल-कोष्ठक संयोजन, 'आँधी नौका' के आकार में बुर्ज, पिरामिडी छत तथा अन्य आलंकारित अभिप्राय।

17. Dhar Fort, Dhar, Madhya Pradesh

Dhar, the capital of the native State of that name, lies 53 kms. west of Mhow. During the reign of Dilawar Khan Ghori, a Ghurid ruler in 15th century. A.D., a number of building projects were carried out, contrary to the period when Dhar was under the suzerainty of the Paramaras.

In the 10th centrury A.D., it was the Paramar King Bhoja I who built it as the capital city and laid the foundation of the Dhar Fort. The fort built in red stone was encircled by a fortification wall with four gateways and embellished with 24 round and 2 square towers. It is a remarkable example of provincial Indo-Islamic architecture in Malwa. The Ghurid rulers borrowed several features from Delhi's architecture particularly the use of battered walls of the dismantled Hindu temples, the pointed arch with spearhead fringe, the arch-lintel-bracket combination, the 'boat-keel' dome, pyramidal roof and other decorative motifs.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल

Forts and Palaces of Madhya Pradesh

18. कालिंजर दुर्ग, कालिंजर, मध्य प्रदेश

कालिंजर दुर्ग, भारत के प्राचीनतम दुर्गों में से एक है तथा बुन्देलखण्ड अंचल में है। विंध्य पर्वत शृंखला के अंतिम स्कंध पर भूतल से 375 मी. की ऊंचाई पर बना यह दुर्ग, बांदा से 57 किलोमीटर की दूरी पर है। मूलतः कालिंजर पर चन्देलों का आधिपत्य था। 11वीं शताब्दी ईसवी में इस पर अनेक आक्रमण हुए– 1019 ईसवी में महमूद गज़नवी, 1202 ईसवी में कुतुब-उद्-दीन ऐबक, 1530 ईसवी में हुमायूं तथा 1545 ईसवी में शेरशाह ने आक्रमण किया।

पूर्व से पश्चिम तक दो किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक एक किलोमीटर की परिधि में फैले इस वर्गाकार दुर्ग में 45 मी. ऊँचे परकोटे सहित सात प्रवेश द्वार हैं, जो एक शुभ संख्या मानी जाती है। ये हैं– आलमगीर दरवाज़ा, गणेश दरवाज़ा, चाँदी दरवाज़ा, बुध बद्र दरवाज़ा, हनुमान दरवाज़ा, लाल दरवाज़ा तथा बड़ा दरवाज़ा। आलमगीर दरवाज़े से गणेश दरवाज़े तक के ढलान युक्त तथा पथरीले मार्ग को काफ़िर घाट कहा जाता है। केवल बुध बद्र दरवाज़े तक सीढ़ियों से चढ़कर पहुंचा जाता है। सभी दरवाज़ों की सुरक्षा मीनारों या पुलों से की जाती थी।

18. Kalinjar Fort, Kalinjar, Madhya Pradesh

Kalinjar Fort, reputed to be one of the oldest forts of India, lies in the Bundelkhand region. Built at a height of 375 m. from the ground level on the last spur of the Vindhya mountains, Kalinjar fort is at a distance of 57 km. from Banda. Originally the seat of Chandellas, in the 11th century A.D. it was invaded by Mahmud of Ghazni in 1019 A.D., Qutub-ud-Din Aibak in 1202 A.D., Humayun in 1530 A.D. and Sher Shah in 1545 A.D.

Expanded in a circumference of 2 km. from east to west and 1 km. from north to south, this square shaped fort with 45 m. high rampart has seven entrance gates, considered as the auspicious number. These are known as Alamgir *Darwaza*, Ganesh *Darwaza*, Chandi *Darwaza,* Budh Budr *Darwaza,* Hanuman *Darwaza,* Lal *Darwaza* and Bara *Darwaza.* The steep and stony route from Alamgir *Darwaza* to Ganesh *Darwaza* is called Kafir *Ghat*. Only Budh Budr *Darwaza* is approached by a flight of steps. All the gates are guarded by either towers or bridges.

19. अमन सिंह महल, कालिंजर दुर्ग, मध्य प्रदेश

राजा अमन सिंह का महल, संपूर्ण कालिंजर दुर्ग को जल प्रदान करने वाले विशाल कुण्ड, कोठ तीर्थ के निकट है। इसका अहाता चट्टान से काटकर बनाया गया है और मोर के आकार के तोरणों की समानान्तर पंक्तियों से घिरा हुआ है। यहां बेशकीमती पाषाण अवशेषों, जैसे – लेटे हुए शिव, नर्तन गणेश एवं नन्दी बैलों की आकृतियों आदि को देखा जा सकता है। यहां के आन्तरिक भाग से सीढ़ियों की दो पंक्तियां भगवान शिव को समर्पित नीलकंठ मंदिर की ओर जाती हैं, जो हमें बीते समय के गौरव की याद दिलाता है। अहाते में अब भी हनुमान जी की मुखाकृति वाली एक गिरी हुई आकृति, वराह के अवतार में विष्णु, आदमकद नृत्य करते गणेश आदि खण्डित शिल्पाकृतियां देखी जा सकती हैं।

19. Aman Singh's Palace, Kalinjar Fort, Madhya Pradesh

Near the Koth Tirth, a large tank which supplied water to the whole fort, is King Aman Singh's palace. Its courtyard is hewn out of the rock and surrounded by parallel rows of peacock arches. Here one can see several precious stone-relics — a reclining Shiva, a dancing Ganesha, Nandi Bulls etc. From its interiors, two flights of steps lead down to Neel Kanth Temple, dedicated to Lord Shiva which reminds us of the glory of the past. Distorted sculptures can still be found in the premises — a toppled figure with the face of Hanuman, Vishnu in the incarnation of boar, lifesize dancing Ganesha etc.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

20. नरवर दुर्ग (प्रांगण), ग्वालियर, मध्य प्रदेश

नरवर दुर्ग, भूतपूर्व ग्वालियर राज्य के तीन प्रमुख गिरिदुर्गों में से एक है। अन्य दो दुर्ग हैं– ग्वालियर तथा चन्देरी दुर्ग। ग्वालियर दुर्ग के पश्चात् परिमाप में इसी का स्थान है। कछवाहा शासक इस प्रदेश के सर्वप्रथम व प्रमुख शासक थे। इल्तुतमिश द्वारा 13वीं शताब्दी ईसवी के मध्य में पराजित किए जाने के पश्चात् गुर्जर-प्रतिहार शासक ग्वालियर से नरवर दुर्ग में स्थानांतरित हो गए। पर जल्द ही उनका स्थान नरवर के यजपाल राजवंश के प्रवर्तक चहाड़ देव ने ले लिया।

भूतल से 120 मी. ऊँचाई पर विंध्य पर्वत शृंखला की एक सपाट शिखर युक्त एकाकी पहाड़ी पर यह गिरिदुर्ग है। यह दुर्ग एक प्राकृतिक खाई से घिरा हुआ है, जिसके पश्चिम व उत्तर की ओर सिंध नदी बह रही है। यह संपूर्ण अंचल चार भागों में विभक्त है : मझलोक – मध्य भाग; दूल्हा अहाता – पश्चिमी भाग; मदार अहाता – दक्षिण-पूर्वी भाग तथा गुर्जर अहाता – दक्षिणी भाग।

मझलोक में अनेक महल थे, जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। कछवाहा शासकों द्वारा निर्मित ये महल, पश्चिम की ओर से एक विशाल मज़बूत किलेबन्द दीवार से संरक्षित हैं। यह दीवार इसे शेष रिहायशी क्षेत्र से अलग करती है। प्रत्येक महल में अहातों की एक शृंखला है, जिसमें दर्शक सभागार, सिंहासन कक्ष, मंडप, सुन्दर बागादि से युक्त स्नानादि की व्यवस्था लिए हमाम आदि को देखा जा सकता है। ये महल राजपूत शैली की भित्ति चित्रकृतियों तथा कांच के जड़ाऊ कार्य से प्रचुर रूप से अलंकृत थे।

20. Narwar Fort (Courtyards), Gwalior, Madhya Pradesh

Narwar is one of the three main hill-forts of the erstwhile Gwalior State, the other two being Gwalior and Chanderi forts. In dimensions, it is next to Gwalior fort. The Kachhwahas were the first and foremost rulers of this region. Towards the middle of the 13th century A.D., Gurjara-Pratiharas, after being defeated by Iltutmish, shifted from Gwalior to Narwar. They were soon replaced by Chahada Deo, founder of the dynasty of Yajapalas of Narwar.

The hill fort is situated over an isolated flat-topped hill of Vindhyan range, 120 m. high from the ground level. It is surrounded by a natural moat formed by the Sindh river flowing on its western and northern side. The entire region had been divided into four sectors — Majhloka, the middle portion; Dulha-Ahata, the western portion; Madar-Ahata, south eastern portion and Gurjar-Ahata, southern-most portion.

In the Majhloka, there were number of palaces which are in ruins now. These palaces built by Kachhwaha kings are protected on the western side by a massive fortified wall. It demarcates this from the rest of the inhabited area. Each palace comprises a series of courtyards having audience hall, throne-room, pavilions, *hammams* with bathing arrangements attached with pleasure gardens etc. The palaces were profusely decorated with glass inlay-work and wall paintings of Rajput style.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

21. बादल महल, चन्देरी, मध्य प्रदेश

स्वतन्त्र रूप से निर्मित बादल महल द्वार 50 फुट ऊंचा तथा 25 फुट चौड़ा है। इसके दोनों ओर दो शुण्डाकार मीनारें हैं। इन दो अवलंबों के बीच तोरण पथ दो मंज़िलों में विभाजित हैं। ऊपर की मंजिल चार सुसज्जित पाषाण आवरणों से भरपूर है। नीचे की मंज़िल में एक तोरणयुक्त गलियारा है।

इसका अनोखा अलंकरण दिल्ली, मालवा, राजपूताना तथा गुजरात से ग्रहण की गई वास्तुकलात्मक विशेषताओं के संयोगात्मक मिश्रण को प्रतिबिंबित करता है।

21. Badal Mahal, Chanderi, Madhya Pradesh

The Badal Mahal Gate, 50 ft.high and 25 ft. wide, stands unattached from other buildings. It has two tapering buttresses on either side, within these twin supports, the archway is divided into two storeys. The upper storey is filled with four decorative stone screens. The lower storey has an arched passage.

Its ornamentation reflects the unusual mixture of architectural features borrowed from Delhi, Malwa, Rajputana and even Gujarat.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

22. कुशक महल, चन्देरी, मध्य प्रदेश

मालवा के महमूद शाह प्रथम द्वारा 1445 ईसवी में निर्मित कुशक महल, चन्देरी के प्राचीनतम स्मारकों में से एक है। इस महल की मूलतः सात मंजिलें थीं, जिनमें से अब केवल चार मंजिलें ही शेष हैं। इस महल की वास्तु योजना वर्गाकार है, जिसके हर तरफ के मध्य भाग से प्रवेश किया जा सकता है। इसकी दीवारें बाहर से सपाट हैं तथा उनमें नियमित दूरी पर छज्जों से युक्त खिड़कियां हैं।

आन्तरिक भाग में, समकोणों पर दो तोरणयुक्त पारगामी गलियारे हैं, जो संपूर्ण क्षेत्र को चार चतुर्थांशों में विभाजित करते हैं, जिनके बीच महल के सभागार हैं। निर्माण की यही योजना ऊपर की मंज़िलों में भी प्रयोग में लाई गई हैं, जिनमें अन्दर की ओर तोरणयुक्त गलियारे तथा बाहर की ओर स्थित छज्जों से युक्त खिड़कियों से रोशनी आने की व्यवस्था की गई है।

22. Kushak Mahal, Chanderi, Madhya Pradesh

Kushak Mahal, built in 1445 A.D. by Mahmud Shah I of Malwa, is one of the earliest monuments of Chanderi. Originally a seven-storeyed palace of which only four exist now, it is square in plan with entrance in the middle of each side. Its walls, plain from exterior, have balconied windows at regular intervals.

In the interior, two arched passages cross at right angles, thereby dividing the whole area into four quadrants within which are located palace halls. The same pattern is carried on to the storeys above with arched passages from inside and light filters through the balconied windows on the outside.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

23. चन्देरी दुर्ग, चन्देरी, मध्य प्रदेश

एक समय में चेदि वंश के राजा शिशुपाल के अधीन रहा चन्देरी दुर्ग, अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। लंबाई में यह दुर्ग 6 कि.मी. के क्षेत्र में है और यहां से चन्देरी नगर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

इस दुर्ग के पांच दरवाजे थे–पूर्व की ओर तलिया दरवाजा; उत्तर की ओर दिल्ली दरवाजा; पश्चिम की ओर फकीर व चंग दरवाजा और दक्षिण की ओर खूनी दरवाजा। वर्तमान में इन में से केवल तीन द्वार ही सही हालत में हैं – दिल्ली दरवाजा, फ़कीर दरवाजा तथा खूनी दरवाजा।

चन्देरी दुर्ग की एक प्रमुख विशेषता है – इसके आलों पर पायी जाने वाली शार्दूल की आकृति। किले के अहाते में बनाए गए अनेक बुर्ज, जो चौकसी बुर्ज के रूप में काम आते थे। इनमें से अब केवल तीन ही शेष हैं – उत्तर में कमल बुर्ज, दक्षिण में गदा बुर्ज तथा पश्चिम में भद भद बुर्ज।

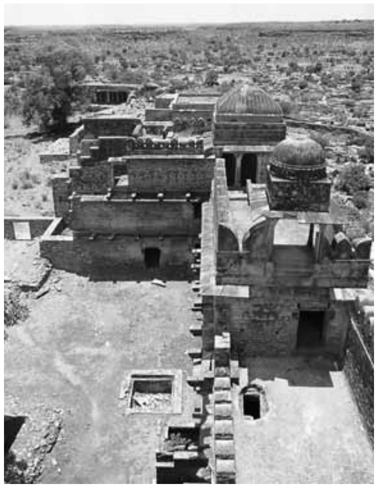

23. Chanderi Fort, Chanderi, Madhya Pradesh

The Chanderi Fort, now in ruins, was once subjugated under the reign of Sisupala – the Chedi. It lies within a circuit of 6 km. lengthwise and offers a birds eye view of the city of Chanderi.

It has five gates – Taliya *Darwaza* on the east; Delhi *Darwaza* in the north; Faquir *Darwaza* and Changa *Darwaza* on the west; and Khuni *Darwaza* on the south. At present only three are in proper state which are Delhi *Darwaza,* Faquir *Darwaza* and Khuni *Darwaza.*

One of the prominent features of Chanderi Fort is the *Shardula* motif found on the niches. Number of bastions, which served as watch towers were built in the premises of the fort of which only three are existing. They are Kamala *burj* in the north, Gada *burj* in the south and Bhad Bhad *burj* in the west.

24. इन्दौर महल, इन्दौर, मध्य प्रदेश

इन्दौर महल, जिसे महाराजा मल्हार राव होल्कर द्वितीय ने बनवाया था, जूना रजवाड़ा के नाम से भी जाना जाता है। इस महल की विशेषता इसका सात मंज़िला द्वारपथ है, जिसकी वास्तुकला में फ्रांसीसी, मुगल तथा मराठा वास्तुशैली का मिश्रण है। इस ऊँची और भव्य इमारत के केन्द्रीय द्वारपथ के दोनों ओर ढलुवाँ कक्ष हैं।

इन्दौर की ऐतिहासिक इमारत, जूना रजवाड़ा के आस-पास का क्षेत्र अति सुन्दर है। इसके दाहिनी तरफ 1832 ईसवी में बना गोपाल मंदिर है, जिसमें एक बड़ा केन्द्रीय सभागार है, जहां विस्तृत रूप से अलंकृत छत को सहारा दिए हुए ग्रेनाइट के स्तंभ हैं। महल के अन्दर पारिवारिक देवता–मल्हारी मार्तण्ड का मंदिर है तथा महल के उस पार समाज के गरीब वर्ग के लिए अन्न छत्र नामक धर्मार्थ स्थान है।

24. Indore Palace, Indore, Madhya Pradesh

Indore Palace, also known as Juna Rajawada, was built by Maharaja Malhar Rao Holkar II. Its most distinguishing feature, a seven storeyed gateway, is a mixture of French, Mughal and Maratha style of architecture. The lofty and imposing structure as canted bays on either side of a central archway.

A landmark of Indore, Juna Rajawada has beautiful surroundings. To its right is Gopal Temple, built in 1832 A.D., with a large central hall having granite pillars supporting an elaborately decorated roof. Inside the palace is a temple of Malhari Martand, a family deity and across the palace is Anna Chatra, the charitable place for the poor sections of society.

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

1. ग्वालियर दुर्ग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

यह दुर्ग एक सपाट शिखर, उठानयुक्त किनारों और एकाकी बलुआ पत्थर की पहाड़ी पर स्थित है। यह लंबी एवं संकरी पहाड़ी आस-पास के समतल मैदानों से लगभग 300 फुट ऊँचाई तक जाती है तथा उत्तर से दक्षिण तक लगभग 3 कि. मी. लम्बी एवं पूर्व से पश्चिम तक लगभग 600 से 2800 फुट चौड़ी है। पहाड़ी के किनारों पर पलस्तर किया हुआ है, ताकि दुर्ग की दीवार पहाड़ी के किनारे से ही निकलती हुई सी प्रतीत हो।

योजना के अनुसार उप-महाद्वीप के उत्तर-दक्षिणी मार्ग पर स्थित ग्वालियर दुर्ग, भारत के अत्यन्त प्राचीन दुर्गों में से एक है। इसकी नींव तीसरी शताब्दी ईसवी में रखी गई थी। हूण राजवंश के एक शासक, मिहिरगुला के राज्यकाल में 5वीं शताब्दी ईसवी के दौरान दुर्ग के अहाते में सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया था। 950 ईसवी में सूरज पाल द्वारा यहां पर हिन्दू राजवंश की स्थापना की गई। जब 1129 ईसवी में यह राजवंश समाप्त हो गया तो इसके पश्चात् प्रतिहार राजवंश आया, जिसके पास यह दुर्ग 1232 ईसवी में दिल्ली के सम्राट इल्तुतमिश द्वारा कब्जा किए जाने तक रहा। 1398 ईसवी में तोमर राजपूत, वीर सिंह देव, तैमूर के आक्रमण से उत्पन्न अशांति का लाभ लेकर ग्वालियर के राजा बन गए तथा यहां उन्होंने तोमर वंश स्थापित किया। मान सिंह 1486 ईसवी में राजा बने, जो तोमर शासकों में महानतम थे। मान सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके बेटे विक्रमादित्य ने 1518 ईसवी तक ग्वालियर पर अपना नियंत्रण रखा। इब्राहिम लोदी ने सफलतापूर्वक दो वर्ष की घेराबन्दी को समाप्त कर दिल्ली सल्तनत के लिए इस दुर्ग को जीत लिया। 18वीं शताब्दी ईसवी के मध्य तक यह दुर्ग मुगलों के अधीन रहा, और उनके बाद मराठों ने 1754 ईसवी में इसे अपने अधिकार में ले लिया।

आगामी 50 वर्षों तक यह दुर्ग विभिन्न राजवंशों के आक्रमण सहता रहा। तत्पश्चात् इस पर सिंधिया राजवंश ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इतने लंबे और विविधतापूर्ण इतिहास के दौरान इस दुर्ग के अन्दर तथा नीचे की ओर, महलों व मंदिरों सहित अनेक इमारतें बनाई गईं, जिनमें मानसिंह महल, गूजरी महल, सास-बहू का मंदिर तथा तेली का मंदिर शामिल है। यह विशाल गिरिदुर्ग चारों ओर से एक चौड़ी व गहरी खाई से घिरा हुआ था, जिसे 'सुवर्ण-रेखा नाला' कहा जाता था। मूलतः दुर्ग के सात प्रवेश द्वार थे, जिनमें से वर्तमान में केवल पांच विद्यमान हैं– आलमगीर दरवाजा, हिंडोला दरवाजा, गणेश दरवाज़ा, लक्ष्मण दरवाज़ा तथा हाथी दरवाज़ा।

2. मान सिंह महल (भीतरी दृश्य), ग्वालियर दुर्ग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

मान सिंह महल, ग्वालियर दुर्ग के प्रवेश द्वार की भाँति है, जो कि सुन्दर खपरैलों तथा बत्तखों, हाथियों व मोरों के नमूनों के चित्रित अलंकरणों सहित एक शानदार इमारत है। यह महल राजा मान सिंह द्वारा 1486 से 1516 ईसवी के बीच बनाया गया।

इसे मध्यकालीन भारत के हिन्दू वास्तुकला के एक उत्कृष्ट और रुचिकर उदाहरण के रूप में वर्णित किया जाता है। महल के पूर्वी भाग में, इसकी दो मंजिलें ऊपर की ओर तथा दो भूतल के नीचे हैं। खड़ी चट्टान के किनारे पर यह महल बना हुआ है तथा इसमें मीनारों और मूलतः मुलम्मा चढ़े तांबे से आवरणित गुम्बदयुक्त छतरियों की शृंखला है। अंदर की ओर विशाल कक्ष - मान मंदिर और विक्रम मंदिर हैं, जिनका उपयोग संगीत सभागृहों के रूप में किया जाता था तथा जहां पर उत्कृष्ट जाली कार्य से युक्त पर्दों के पीछे बैठकर राजसी महिलाएं उस समय के महान संगीतज्ञों से संगीत सीखती थीं। ये कक्ष अनेकानेक कमरों से घिरे हैं, जिनकी छतें विस्तारित रूप से अलंकृत हैं।

मान मंदिर के द्वार-स्तंभ विशाल हैं तथा लहरदार ओरियों को दीवारगीरों की कतारों द्वारा आधार प्रदान किया गया है।

3. गूजरी महल, ग्वालियर दुर्ग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

मध्यकालीन वास्तुकला की अद्भुत प्रस्तुतियों में एक, गूजरी महल 1510 ईसवी में राजा मानसिंह द्वारा अपनी प्रिय रानी मृगनयनी की याद में बनवाया गया। यह महल ग्वालियर दुर्ग के अहाते में है। बड़े प्रांगण के आसपास बने आंतरिक भाग सहित कलात्मकता से परिपूर्ण चिनाई करके बनाई गई यह दो मंज़िली इमारत सांचे में ढाले गए अलंकरणों के समूहों और उत्कीर्णित दीवारगीरों सहित छोटे कक्षों से घिरी है। इसका आंतरिक भाग पुरातत्व संग्रहालय में परिवर्तित हो गया है, जिसमें हिन्दू व जैन शिल्पकला, अभिलेखों व चित्रकृतियों का उत्कृष्ट संग्रह है। इसमें प्रदर्शित वृक्ष देवी शालभंजिका की प्रतिमा ग्यारसपुर से लाई गई है।

4. जय विलास महल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

जय विलास महल ग्वालियर के अनेक प्रसिद्ध महलों में से एक है। यह महाराजा जयाजी राव द्वारा 1872 से 1874 ईसवी के बीच निर्मित एक शानदार महल है। सन् 1857 में आज़ादी की पहली लड़ाई के पश्चात्, सिंधिया राजवंश को ग्वालियर शहर पर शासन करने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ। जय विलास महल में देशी विशेषताओं सहित तुस्कन व कोरिंथियाई वास्तुकला की मिश्रित शैली दिखाई देती है।

इस महल के प्रमुख वास्तुकार ले. कर्नल सर माइकेल फिलोस ने प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन हेतु दो वर्ष में ही इस पूरे महल का निर्माण किया था। जय विलास महल का प्रमुख प्रवेश, दक्षिणी अग्रभाग के केन्द्र के पूर्व व पश्चिम में स्थित छतदार द्वार-मंडपों से हो कर है। दरबार हॉल 15 मी. × 85 मी. का माप लिए है, जिसकी छत 12 मी. से भी अधिक ऊंची है। इसमें एक विशाल दीपाधारों का जोड़ा है, जिनमें से प्रत्येक में 248 चिराग है। इनकी ऊंचाई 42 फुट व वजन लगभग 3 टन है। ये विश्व के विशालतम दीपाधारों में से एक हैं। महल में सोने के रंगलेप युक्त कांच का फर्नीचर तथा अतिथियों को पेय आदि देने हेतु एक चांदी की खिलौना रेलगाड़ी सहित एक विशाल खाने की मेज़, भारतीय तथा इतालवी शिल्पकारों की कारीगरी की मिश्रित शैली को दर्शाती है।

वर्तमान में, यह महल सिंधिया परिवार का निवास स्थान है। इस महल के एक भाग को संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, जो हमें शासकों की राजसी जीवन-शैली के बारे में बताता है और बीते समय की याद को ताज़ा करता है।

5. जहाँगीर महल, ओरछा, मध्य प्रदेश

बुंदेला राजवंश द्वारा 16वीं शताब्दी ईसवी में शासित, ओरछा अपने शानदार महलों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें से एक है–जहाँगीर महल, जिसे ओरछा के सुलतान राम सिंह के छोटे भाई, बीर सिंह देव द्वारा 17वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित किया गया। मुगल सम्राट अकबर की मृत्यु के पश्चात् 1605 ईसवी में जहांगीर द्वारा बीर सिंह देव को ओरछा का राज्य प्रदान किया गया था। बीर सिंह देव, अबुल फज़ल की मृत्यु में सहायक था। उसकी वास्तुकलात्मक विशेषता में हिन्दू व मुस्लिम शैली का मिश्रण दिखाई देता है।

छज्जों से युक्त छतरियों तथा आठ गुम्बदों से आच्छादित पांच मंज़िला जहाँगीर महल बेतवा नदी के किनारे पर स्थित है। इसके मुख्य प्रवेश स्थान पर हाथियों का एक जोड़ा पार्श्व में है और इसका संपूर्ण ढांचा बलुआ पत्थर से उत्कीर्णित है। दक्षिणी अग्रभाग में एक द्वारमार्ग सभागृह से होते हुए एक खुले चतुष्कोण की ओर जाता है, जिसमें एक केन्द्रीय फव्वारा है तथा जिसके आसपास तीन मंज़िलों की पंक्ति में व्यवस्थित कमरे व छज्जे हैं। कमरों के समूहों के बीच पार्श्विक सम्पर्क, चौड़ी ओरियों से संरक्षित लटकते छज्जों से होते हुए बाहरी दीवारों और जाली-कार्य से युक्त आवरणों से सुसज्जित खिड़कियों के समानान्तर हैं।

मुगल शैली में बनाए गए बाग की परिकल्पना चार बाग के आधार पर की गई है तथा इसमें व्यवस्थित रूप से निर्मित बाग व शीतल नहरे हैं, जो इस चित्र में दिखाई नहीं पड़ रहे हैं।

6. कालियादह महल, उज्जैन, मध्य प्रदेश

मालवा के तीसरे खिलजी सुलतान नसीर शाह ने 15वीं शताब्दी ईसवी में उज्जैन से छह मील उत्तर में कालियादह महल का निर्माण किया। यह महल क्षिप्रा नदी के एक द्वीप पर स्थित है।

कालियादह महल में एक केन्द्रीय सभागार है, जिसके चारों ओर वीथिकाएं हैं। इस ग्रीष्म सैरगाह की उत्कृष्ट विशेषता, सुन्दर आकारों में बनी नहरों से होकर नदी के जल का अनेकानेक कुण्डों में पहुंच कर शिल्पात्मक पाषाणों पर गिरना है। कृत्रिम जलप्रपात एक पतले फलक पर फैल जाता है, जहां से जल वापस क्षिप्रा नदी में चला जाता है। जल लगभग 20 फुट की ऊंचाई से गिरता है। इस प्रणाली द्वारा ईंट-पत्थर की चिनाईयुक्त चबूतरे पर बने कक्षों को शीतल रखा जाता है।

7. हिंडोला महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

दिल्ली पर 1398 ईसवी में तैमूर के आक्रमण के पश्चात् तुगलक वंश समाप्त हो गया। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए 1401 ईसवी में धार के गवर्नर दिलावर खान ग़ौरी, जो मूलतः अफ़गानिस्तान का रहने वाला था, ने स्वयं को धार का सुलतान घोषित कर दिया। उसके बेटे होशंग शाह ने 1405 ईसवी में उत्तराधिकार में राज्य प्राप्त किया और अपनी राजधानी को स्थाई रूप से माण्डू स्थानांतरित कर दिया।

अपनी ढालू या तिरछी बनी दीवारों के कारण झूलते महल के नाम से भी प्रसिद्ध हिंडोला महल 1425 ईसवी में बनाया गया था। इसकी शुण्डाकार दीवारें लगभग 77 डिग्री की ढलान लिए हुए हैं। यह पूरी इमारत अंग्रेजी वर्णमाला के 'टी' के आकार की हैं तथा इसका आयताकार भाग सभागार और अर्गला (क्रॉस बार) भाग राजसी कमरों के रूप में है। सभागार 110 फुट लंबा, 60 फुट चौड़ा तथा 35 फुट ऊँचा है, जिसमें अनुप्रस्थ मेहराबों सहित एक विशाल कक्ष के आसपास अनेकानेक तोरण पथ हैं, जिनके ऊपर एक वीथिका बनी हुई है। दुमंज़िले राजसी कक्ष, कलात्मक परिकल्पना ली हुई झरोखा रूपी खिड़कियों सहित बने हुए थे तथा ये बलुआ पत्थर में महीन जाली के कार्य से समृद्ध हैं। यह संपूर्ण इमारत एक ठोस मजबूती का आभास देती है।

8. जहाज़ महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

राजा होशंग शाह के पुत्र को उसके तुर्क मंत्री, महमूद खान खिलजी ने 1436 ईसवी में ज़हर दे दिया और मध्य भारत में ख़िलजी वंश की स्थापना की। उसने 15वीं शताब्दी ईसवी के उत्तरार्द्ध में अपनी रानियों के लिए जहाज़ महल का निर्माण किया।

अपने नाम के अनुरूप जहाज़ महल, मुंज तालाब तथा कपूर तालाब नामक दो कृत्रिम झीलों के बीच स्थित है, जो दूर से देखने पर एक जहाज़ के समान प्रतीत होता है। यह संपूर्ण इमारत अत्यंत विशाल है और लगभग 100 मी. लंबी तथा 15 मी. चौड़ी है।

इसके आच्छादित भूतल के ऊपर की ओर एक चौड़ी ओरी है और सीढ़ियों की एक चौड़ी पंक्ति खुली छत की ओर जाती है। भूतल में, सुन्दर स्नानागार तथा फव्वारों से युक्त राजसी प्रांगण सहित तीन विशाल कक्ष हैं, जबकि छत के ऊपर मंडप, छतरियां तथा गुम्बज हैं। जहाज़ महल का मुंज तालाब व कपूर तालाब में दिखने वाला प्रतिबिंब दर्शकों पर एक जादुई प्रभाव डालता है। आन्तरिक चित्र में आप जहाज़ महल के पीछे का हिस्सा देख सकते हैं।

9. अशरफ़ी महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

महमूद खान खिलजी द्वारा 15वीं शताब्दी ईसवी में बनवाया गया अशरफ़ी महल जामी मस्ज़िद के ठीक सामने स्थित है। इस इमारत की कल्पना मूलतः इस्लामी विद्वानों के लिए मदरसा के रूप में की गई थी। अब यह इमारत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इसकी दीवारों का निर्माण कामचलाऊ ढंग से तैयार किए गए अनगढ़े पत्थरों से किया गया था, क्योंकि अधिक ध्यान इसकी सतह के खूबसूरत प्रस्तुतीकरण पर दिया गया था। कांच चढ़ाने की फ़ारसी तकनीक को मुलतान से अपनाया गया, जिसे इस महल की चमकदार रंग से युक्त गुम्बदयुक्त संरचना में देखा जा सकता है।

15वीं शताब्दी ईसवी में चित्तौड़ के राणा कुम्भा पर अपनी विजय के प्रतीक स्वरूप महमूद खान खिलजी ने एक सात मंज़िली मीनार बनवाई थी, जो अब ढह चुकी है।

मदरसा की छत पर 1450 ईसवी में एक शाही मक़बरा निर्मित किया गया। इस मक़बरे को 27 फुट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित किया गया था। सीढ़ियों की एक पंक्ति स्तम्भयुक्त द्वार-मंडप की ओर जाती है, जिसमें प्रत्येक ओर शीर्ष पर एक विशाल गुम्बद से युक्त छत्ते हैं। आन्तरिक चित्र में आप जामी मस्ज़िद को देख सकते हैं।

10. बाज़ बहादुर महल, माण्डू, मध्य प्रदेश

1509 ईसवी में निर्मित बाज़ बहादुर महल, कवि-राजकुमार बाज़ बहादुर की अपनी सुन्दर पत्नी, रानी रूपमती के प्रति प्रेम की कल्पित कथा की एक अभिव्यक्ति है।

मूलतः एक सेना प्रेक्षण चौकी के रूप में इस भवन का निर्माण किया गया था। इसकी विशेषता चारों ओर सभागारों सहित विस्तृत खुला प्रांगण है। रानी रूपमती का मण्डप, ऊपर की ओर खुला एकान्त स्थान था, जहां से वह नर्मदा नदी को नीचे की ओर निमाड़ के मैदान से होकर बहते हुए देख सकती थी।

महल के निचले भाग में रेवा कुण्ड है, जिसका जल स्रोत नर्मदा नदी से था, जो एक समय में महल में रहने वाले लोगो की आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। आज भी इस कुण्ड को लोगों द्वारा पवित्र माना जाता है।

11. पन्ना महल, पन्ना, मध्य प्रदेश

हीरों की नगरी, पन्ना एक सुव्यवस्थित नगर है, जहां मूलत: बुंदेल निवास करते थे। एक अंग्रेजी वास्तुकार ने 1886 ईसवी में रुद्र प्रताप सिंह के लिए पन्ना महल की परिकल्पना की थी।

चौड़ी सीढ़ियों के उत्कीर्ण प्रकारों से अंकित पंक्ति लंबी धारियों से युक्त स्तंभों वाले अग्रभाग, कोरिंथियाई शीर्षों, त्रिकोणीय द्वारमार्गों और आच्छादित गलियारे में विस्तृत मरगोल कार्य की ओर ले जाती है। यद्यपि प्रमुख रूप से यह महल रोम की वास्तु शैली में बना है, फिर भी इसमें कुछ भारतीय विशेषताएं भी हैं, जैसे एकैन्थस की पत्तियों के स्थान पर कोरिंथियाई शीर्षों के आसपास कमल की पत्तियां देखी जा सकती हैं।

महल के अग्रभाग तथा पीछे के भाग में एक विशिष्ट विषमता देखी जा सकती है। आगे के भाग में यूरोपीय अतिथियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए परिकल्पित कक्ष हैं और पीछे के भाग (आन्तरिक चित्र) में ज़नाना, पवित्र कुण्ड, ग्रीष्म मण्डप तथा सेवकों के निवास हैं।

12. रीवा महल, रीवा, मध्य प्रदेश

रीवा महल, जो प्राचीन नगर महल के नाम से भी प्रसिद्ध है, वास्तुकला की दृष्टि से राजपूत तथा मुगल शैली का सम्मिश्रण है। मुगलों के आधिपत्य में मूलत: बघेला सरदारों द्वारा 16वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित इस महल में दरबार हॉल तथा स्वागत सभागार थे। बाद के वर्षों में इस महल में अन्य अनेक मंदिर, प्रांगण, स्नानागार तथा बहुत-से सभागार और गलियारे बनाए गए।

दरबार हॉल एक विशाल कक्ष है, जिसमें शाही शक्ति तथा वैभव को प्रदर्शित करते अविश्वसनीय रंगीन कांच के कार्य से युक्त सोने का मुलम्मा चढ़ी दीवारें हैं। स्वागत सभागारों में गोलाकार लंबी धारियों एवं बेल बूटों सहित स्तंभों का निचला हिस्सा चौकोर आकृति का है। स्तंभों के शीर्ष पर निर्मित तोरण, दीप आलों से सुसज्जित हैं।

13. गोविन्दगढ़ महल, रीवा, मध्य प्रदेश

गोविन्दगढ़ महल रीवा नगर से 24 कि.मी. की दूरी पर है। इसे राजपूत शैली में रीवा के रघुराज सिंह के लिए शिकारगाह के रूप में निर्मित किया गया था। यह महल कच्छ वनस्पति तथा जंगल से घिरी झील के किनारे स्थित है। जिसके साथ के अहाते में विशाल चबूतरे पर एक कमलाकार मेहराब बनाई गई है। आन्तरिक चित्र में आप काठी महल देख सकते हैं।

14. नृसिंह देव महल, दतिया, मध्य प्रदेश

बुन्देल सरदार, बीर सिंह देव द्वारा 1620 ईसवी में निर्मित नृसिंह देव महल, भारत की उत्कृष्टतम इमारतों में से एक है। यह पांच मंज़िला महल, 130 फुट की ऊंचाई लिए एक चट्टानी दृश्यांश पर अवस्थित है।

इस महल की वास्तु योजना चौकोर है तथा इसमें एक मंडप को दूसरे मंडप के साथ जोड़ने वाले भव्य पुलों तथा छज्जों के प्राचुर्य सहित चारों कोनों पर चार मीनारें बनी हैं। पूरा महल चारों तरफ से ओरियों, तोरण पथ, छतरियों और गुम्बजों सहित एक समेकित एकक के रूप में निर्मित है। केन्द्रीय मंडप में राजसी कक्ष हैं। दक्षिणी ओर से कर्ण सागर झील का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है। आंतरिक दृश्य में आप नृसिंह देव महल का पृष्ठभाग देख सकते हैं।

15. अजयपाल मंदिर, अजयगढ़ दुर्ग, मध्य प्रदेश

चन्देलों द्वारा 9वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित अजयगढ़ दुर्ग ग्रेनाइट के दृश्यांश पर बना हुआ है। यह दुर्ग केदार-पर्वत पर रहने वाले संत अजयपाल के नाम से है। जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होने के बावजूद आज भी अजयपाल मंदिर अत्यंत दिलचस्प स्थान है। अजयगढ़ दुर्ग के परिसर में विस्तारित रूप से उत्कीर्णित पत्थरों की पंक्ति पर पंक्ति, धीरे से ऊपर की ओर क्रमश: कम पतली होती दीखती है। दैवीय आकृतियों के उत्कीर्ण किए गए अनेक सती स्तंभ यहां देखे जा सकते हैं।

16. असीरगढ़ दुर्ग, असीरगढ़, मध्य प्रदेश

सतपुड़ा पर्वतश्रेणी के पृथक दृश्यांश पर स्थित असीरगढ़ दुर्ग को लम्बी दूरी से देखा जा सकता है। खण्डवा से दक्षिण की ओर 48 कि. मी. तथा बुरहानपुर से 20 कि.मी. उत्तर पर रणनीतिजन्य रूप से स्थित यह दुर्ग दक्षिण के प्रवेशद्वार के रूप में भी जाना जाता है।

एक चरवाहे असा अहीर द्वारा सन् 1370 ईसवी में निर्मित यह दुर्ग भारत के सर्वाधिक पुराने दुर्गों में से एक है। दुर्ग में पहुंचने के दो मुख्य रास्ते हैं – पश्चिमी तरफ सर्प कुण्डली वाला आरोही रास्ता और दक्षिण-पूर्वी तरफ, सात दरवाजों से रक्षित गोपनीय रास्ता। पश्चिमी हिस्सा पूर्णत: तीन दीवारों द्वारा सुरक्षित है। सबसे निचली सुरक्षा दीवार मलयगढ़, बीच की कमरगढ़ तथा सबसे ऊपर की दीवार असीरगढ़ कहलाती है।

दुर्ग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रमुख प्रवेशद्वार के निकट है, जहां गन टॉवर के नाम से प्रसिद्ध एक विशाल बुर्ज, दक्षिण-पश्चिम की ओर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूती देने हेतु निर्मित किया गया था। यह नुकीले कोनों वाले अनेक परकोटों से युक्त है। इस टॉवर पर बाहरी सीढ़ियों से होकर पहुंचा जा सकता है और एक नुकीले मेहराब वाले द्वारमार्ग से इसमें प्रवेश किया जा सकता है।

17. धार दुर्ग, धार, मध्य प्रदेश

अपने ही नाम की मूल राज्य की राजधानी धार, महू से 53 कि.मी. पश्चिम में स्थित है। घूर शासक दिलावर खान ग़ौरी के शासनकाल में 15वीं शताब्दी ईसवी में, धार में परमार शासकों की तुलना में कहीं अधिक इमारतों का निर्माण हुआ।

10वीं शताब्दी ईसवी के दौरान राजा भोज प्रथम ने धार को राजधानी बनाकर धार दुर्ग की नींव रखी। लाल पत्थर से बना यह दुर्ग चार द्वारपथों सहित एक किलेबन्द दीवार से घिरा हुआ है। यह दुर्ग 24 गोल तथा 2 चौकोर मीनारों से अलंकृत है तथा मालवा में इंडो-इस्लामी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। घूर शासकों द्वारा दिल्ली की वास्तुकला में पाई जाने वाली अनेक विशेषताओं का यहां पर भी इस्तेमाल किया गया है, जैसे खण्डित हिन्दू मंदिरों की टूटी हुई दीवारों का प्रयोग, गोलशीर्ष किनारों सहित नुकीले तोरण, तोरण-सरदल-कोष्ठक संयोजन, 'आँधी नौका' के आकार में बुर्ज, पिरामिडी छत तथा अन्य आलंकारित अभिप्राय।

18. कालिंजर दुर्ग, कालिंजर, मध्य प्रदेश

कालिंजर दुर्ग, भारत के प्राचीनतम दुर्गों में से एक है तथा बुन्देलखण्ड अंचल में है। विंध्य पर्वत शृंखला के अंतिम स्कंध पर भूतल से 375 मी. की ऊंचाई पर बना यह दुर्ग, बांदा से 57 किलोमीटर की दूरी पर है। मूलत: कालिंजर पर चन्देलों का आधिपत्य था। 11वीं शताब्दी ईसवी में इस पर अनेक आक्रमण हुए- 1019 ईसवी में महमूद गज़नवी, 1202 ईसवी में कुतुब-उद्-दीन ऐबक, 1530 ईसवी में हुमायूं तथा 1545 ईसवी में शेरशाह ने आक्रमण किया।

पूर्व से पश्चिम तक दो किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक एक किलोमीटर की परिधि में फैले इस वर्गाकार दुर्ग में 45 मी. ऊँचे परकोटे सहित सात प्रवेश द्वार हैं, जो एक शुभ संख्या मानी जाती है। ये हैं – आलमगीर दरवाज़ा, गणेश दरवाज़ा, चाँदी दरवाज़ा, बुध बद्र दरवाज़ा, हनुमान दरवाज़ा, लाल दरवाज़ा तथा बड़ा दरवाज़ा। आलमगीर दरवाज़े से गणेश दरवाज़े तक के ढलान युक्त तथा पथरीले मार्ग को काफ़िर घाट कहा जाता है। केवल बुध बद्र दरवाज़े तक सीढ़ियों से चढ़कर पहुंचा जाता है। सभी दरवाज़ों की सुरक्षा मीनारों या पुलों से की जाती थी।

19. अमन सिंह महल, कालिंजर दुर्ग, मध्य प्रदेश

राजा अमन सिंह का महल, संपूर्ण कालिंजर दुर्ग को जल प्रदान करने वाले विशाल कुण्ड, कोठ तीर्थ के निकट है। इसका अहाता चट्टान से काटकर बनाया गया है और मोर के आकार के तोरणों की समानान्तर पंक्तियों से घिरा हुआ है। यहां बेशकीमती पाषाण अवशेषों, जैसे – लेटे हुए शिव, नर्तन गणेश एवं नन्दी बैलों की आकृतियों आदि को देखा जा सकता है। यहां के आन्तरिक भाग से सीढ़ियों की दो पंक्तियां भगवान शिव को समर्पित नीलकंठ मंदिर की ओर जाती हैं, जो हमें बीते समय के गौरव की याद दिलाता है। अहाते में अब भी हनुमान जी की मुखाकृति वाली एक गिरी हुई आकृति, वराह के अवतार में विष्णु, आदमकद नृत्य करते गणेश आदि खण्डित शिल्पाकृतियां देखी जा सकती हैं।

20. नरवर दुर्ग (प्रांगण), ग्वालियर, मध्य प्रदेश

नरवर दुर्ग, भूतपूर्व ग्वालियर राज्य के तीन प्रमुख गिरिदुर्गों में से एक है। अन्य दो दुर्ग हैं– ग्वालियर तथा चन्देरी दुर्ग। ग्वालियर दुर्ग के पश्चात् परिमाप में इसी का स्थान है। कछवाहा शासक इस प्रदेश के सर्वप्रथम व प्रमुख शासक थे। इल्तुतमिश द्वारा 13वीं शताब्दी ईसवी के मध्य में पराजित किए जाने के पश्चात् गुर्जर-प्रतिहार शासक ग्वालियर से नरवर दुर्ग में स्थानांतरित हो गए। पर जल्द ही उनका स्थान नरवर के यजपाल राजवंश के प्रवर्तक चहाड़ देव ने ले लिया।

भूतल से 120 मी. ऊँचाई पर विंध्य पर्वत शृंखला की एक सपाट शिखर युक्त एकाकी पहाड़ी पर यह गिरिदुर्ग है। यह दुर्ग एक प्राकृतिक खाई से घिरा हुआ है, जिसके पश्चिम व उत्तर की ओर सिंध नदी बह रही है। यह संपूर्ण अंचल चार भागों में विभक्त है : मझलोक – मध्य भाग; दूल्हा अहाता – पश्चिमी भाग; मदार अहाता – दक्षिण-पूर्वी भाग तथा गुर्जर अहाता – दक्षिणी भाग।

मझलोक में अनेक महल थे, जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। कछवाहा शासकों द्वारा निर्मित ये महल, पश्चिम की ओर से एक विशाल मज़बूत किलेबन्द दीवार से संरक्षित हैं। यह दीवार इसे शेष रिहायशी क्षेत्र से अलग करती है। प्रत्येक महल में अहातों की एक शृंखला है, जिसमें दर्शक सभागार, सिंहासन कक्ष, मंडप, सुन्दर बागादि से युक्त स्नानादि की व्यवस्था लिए हमाम आदि को देखा जा सकता है। ये महल राजपूत शैली की भित्ति चित्रकृतियों तथा कांच के जड़ाऊ कार्य से प्रचुर रूप से अलंकृत थे।

21. बादल महल, चन्देरी, मध्य प्रदेश

स्वतन्त्र रूप से निर्मित बादल महल द्वार 50 फुट ऊंचा तथा 25 फुट चौड़ा है। इसके दोनों ओर दो शुण्डाकार मीनारें हैं। इन दो अवलंबों के बीच तोरण पथ दो मंज़िलों में विभाजित हैं। ऊपर की मंजिल चार सुसज्जित पाषाण आवरणों से भरपूर है। नीचे की मंज़िल में एक तोरणयुक्त गलियारा है।

इसका अनोखा अलंकरण दिल्ली, मालवा, राजपूताना तथा गुजरात से ग्रहण की गई वास्तुकलात्मक विशेषताओं के संयोगात्मक मिश्रण को प्रतिबिंबित करता है।

22. कुशक महल, चन्देरी, मध्य प्रदेश

मालवा के महमूद शाह प्रथम द्वारा 1445 ईसवी में निर्मित कुशक महल, चन्देरी के प्राचीनतम स्मारकों में से एक है। इस महल की मूलत: सात मंजिलें थीं, जिनमें से अब केवल चार मंजिलें ही शेष हैं। इस महल की वास्तु योजना वर्गाकार है, जिसके हर तरफ के मध्य भाग से प्रवेश किया जा सकता है। इसकी दीवारें बाहर से सपाट हैं तथा उनमें नियमित दूरी पर छज्जों से युक्त खिड़कियां हैं।

आन्तरिक भाग में, समकोणों पर दो तोरणयुक्त पारगामी गलियारे हैं, जो संपूर्ण क्षेत्र को चार चतुर्थांशों में विभाजित करते हैं, जिनके बीच महल के सभागार हैं। निर्माण की यही योजना ऊपर की मंज़िलों में भी प्रयोग में लाई गई हैं, जिनमें अन्दर की ओर तोरणयुक्त गलियारे तथा बाहर की ओर स्थित छज्जों से युक्त खिड़कियों से रोशनी आने की व्यवस्था की गई है।

23. चन्देरी दुर्ग, चन्देरी, मध्य प्रदेश

एक समय में चेदि वंश के राजा शिशुपाल के अधीन रहा चन्देरी दुर्ग, अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। लंबाई में यह दुर्ग 6 कि.मी. के क्षेत्र में है और यहां से चन्देरी नगर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

इस दुर्ग के पांच दरवाजे थे – पूर्व की ओर तलिया दरवाजा; उत्तर की ओर दिल्ली दरवाजा; पश्चिम की ओर फकीर व चंग दरवाजा और दक्षिण की ओर खूनी दरवाजा। वर्तमान में इन में से केवल तीन द्वार ही सही हालत में हैं – दिल्ली दरवाजा, फ़कीर दरवाजा तथा खूनी दरवाजा।

चन्देरी दुर्ग की एक प्रमुख विशेषता है – इसके आलों पर पायी जाने वाली शार्दूल की आकृति। किले के अहाते में बनाए गए अनेक बुर्ज, जो चौकसी बुर्ज के रूप में काम आते थे। इनमें से अब केवल तीन ही शेष हैं – उत्तर में कमल बुर्ज, दक्षिण में गदा बुर्ज तथा पश्चिम में भद भद बुर्ज।

24. इन्दौर महल, इन्दौर, मध्य प्रदेश

इन्दौर महल, जिसे महाराजा मल्हार राव होल्कर द्वितीय ने बनवाया था, जूना रजवाड़ा के नाम से भी जाना जाता है। इस महल की विशेषता इसका सात मंज़िला द्वारपथ है, जिसकी वास्तुकला में फ्रांसीसी, मुगल तथा मराठा वास्तुशैली का मिश्रण है। इस ऊँची और भव्य इमारत के केन्द्रीय द्वारपथ के दोनों ओर ढलुवाँ कक्ष हैं।

इन्दौर की ऐतिहासिक इमारत, जूना रजवाड़ा के आस-पास का क्षेत्र अति सुन्दर है। इसके दाहिनी तरफ 1832 ईसवी में बना गोपाल मंदिर है, जिसमें एक बड़ा केन्द्रीय सभागार है, जहां विस्तृत रूप से अलंकृत छत को सहारा दिए हुए ग्रेनाइट के स्तंभ हैं। महल के अन्दर पारिवारिक देवता – मल्हारी मार्तण्ड का मंदिर है तथा महल के उस पार समाज के गरीब वर्ग के लिए अन्न छत्र नामक धर्मार्थ स्थान है।

मध्य प्रदेश के दुर्ग तथा महल
Forts and Palaces of Madhya Pradesh

1. Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

The fortress stands on a flat-topped, sheer-sided and isolated sandstone hill. The hill rises up to 300 ft. above the surrounding plains, and is long and narrow, measuring approximately 3 kms. from north to south and from 600 to 2800 ft., east to west. The sides of the hill are revetted so that the fort wall seems to grow out of the hillside.

Gwalior Fort, strategically located on the main north-south route through the sub-continent, is one of the most ancient forts of India. Its foundation was laid in the 3rd century A.D. During the 5th century A.D. under the reign of Mihirgula, one of the rulers of Hun dynasty, Sun Temple was erected in the premises of the fort. In 950 A.D., a Hindu dynasty was founded there by Suraj Pal. When this became extinct in 1129 A.D., it was followed by the Pratihara dynasty, which held the citadel until it was captured by the Delhi emperor Iltutmish in 1232 A.D. In 1398 A.D, Bir Singh Deo, a Tomar Rajput, took advantage of the turmoil caused by Timur's invasion. He became the king of Gwalior and established the Tomar dynasty there. Man Singh who came to power in 1486 A.D., was the greatest of the Tomar ruler. After his death, his son Vikramaditya controlled Gwalior until 1518 A.D. Ibrahim Lodi successfully concluded a two year siege and won back the fortress for the Delhi Sultanate. The Mughals held the fort till the mid-18th century A.D. until the Marathas conquered it in 1754 A.D.

For the next 50 years, the fort was invaded by different dynasties till it was taken over by the Scindias. During this long and varied history, many buildings were erected in or below the fortress, including palaces and temples which include Man Singh Palace, Gujari Mahal, Saas-Bahu Temple and Teli ka Mandir. This huge hill-fort is surrounded by a wide deep moat called *Suvarna-Rekha Nallah.* Originally, the fortress had seven entrances, of which only five are there, they are Alamgir Gate, Hindola Gate, Ganesh Gate, Lakshman Gate and Elephant Gate.

2. Man Singh Palace (Inside view), Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

The Man Singh Palace which forms the entrance to the Gwalior Fort is a beautiful building with tiled and painted decoration of ducks, elephants and peacocks. The palace was built by Raja Man Singh between 1486 and 1516 A.D.

It is described as a remarkable and interesting example of Hindu architecture of the medieval India. It has two storeys above and two below the ground level in the eastern part of the palace. It is built on the edge of the cliff, with a series of towers and domed cupolas originally covered with gilt copper. In the interior, there are vast chambers - Man Mandir and Vikram Mandir, which were used as music halls, where behind the fine lattice-work screens, royal ladies used to learn music from the great masters of the day. These chambers are surrounded by several rooms with elaborately decorated ceilings.

The pillars of the gateways of Man Mandir are massive and a line of brackets support the corrugated eaves.

3. Gujari Mahal, Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

One of the marvels of the medieval architecture, Gujari Mahal is situated in the premises of the Gwalior Fort. It was built by Raja Man Singh in 1510 A.D. for his wife, Mrignayani.

Gujari Mahal, a two storey masonry building of the artistry with interior portion set around spacious courtyard, is surrounded by small rooms with carved brackets and bands of moulded ornaments. Its interior portion has been converted into an archaeological museum having outstanding collection of Hindu and Jain sculptures, inscriptions and paintings. One of the statue kept there is of the tree goddess, Salabhanjika, brought from Gyraspur.

4. Jai Vilas Palace, Gwalior, Madhya Pradesh

One of the fabulous palaces in Gwalior is Jal Vilas Palace. It is a magnificent city palace built by Maharaja Jayaji Rao between 1872 and 1874 A.D. After the first war of independence in 1857 A.D., the Scindias had the privilege of holding sway over the town of Gwalior. The Jai Vilas Palace reflects a mixed style of architecture i.e. Tuscan and Corinthian along with indigenous features.

It's chief architect Lt. Col. Sir Michael Filose, built the entire palace in a short span of two years for the forthcoming visit of Prince of Wales. The main entrances of Jai Vilas Palace are through covered porticos on the east and west of the centre of the South facade. The Durbar Hall measures 15 m. by 85 m. with the roof over 12 m. high. It has a pair of huge chandeliers with 248 candles apiece, each is 42 ft. high and weighs about 3 tons, one of the largest in the world. The glass furniture, with a lot of gold paint, and a huge dining table with a silver toy train used to serve drinks to the guests, reflect a synthesis of Italian and Indian craftsmanship.

At present, the palace is the residence of the Scindias. A portion of the palace has been converted into museum which indicates the royal lifestyle of the rulers and takes us back down the memory lane.

5. Jahangir Mahal, Orchha, Madhya Pradesh

Orchha, ruled by Bundelas in the 16th century A.D., is known for magnificent palaces. One of them is Jahangir Mahal built in the 17th century A.D. by Bir Singh Deo, younger brother of Ram Singh, Sultan of Orchha. Bir Singh Deo, instrumental in the death of Abu-I-Fazl, was awarded the kingship of Orchha by Jahangir in 1605 A.D., after the death of Akbar, the Mughal emperor. In his architectural feast, one can see the synthesis of Hindu and Muslim style of architecture.

Jahangir Mahal, built in five receding storeys surmounted by eight domes and covered balconies, stands along the banks of the Betwa river. A pair of elephants are flanked at the main entrance and the whole structure is carved of sandstone. A doorway in the southern facade leads through a hall to open quadrangle containing a central fountain around which are arranged the apartments and terraces in the three storey ranges. Lateral communication between the suites of rooms is through hanging balconies protected by wide eaves which run along the outer walls and windows decorated with *jali*-work screens.

The garden (not in the picture) is designed on the Char Bagh pattern with well laid out lawns and cool canals.

6. Kaliadeh Mahal, Ujjain, Madhya Pradesh

Kaliadeh Mahal, which is situated about six miles north of Ujjain city was built by Nasir Shah, the third Khalji Sultan of Malwa in 15th century A.D. The Kaliadeh Mahal is situated on an island of Kshipra river.

Kaliadeh Mahal has a central hall with galleries on all four sides. The remarkable feature of this summer resort is the system by which the water of the river is carried through decorated conduits into several tanks and then allowed to fall from a height of about 20 ft. over sculptured stone curtains. The artificial waterfall is spread into a thin sheet and falls back into the Kshipra river. In this way the chambers built on the masonry platform were kept cool.

7. Hindola Mahal, Mandu, Madhya Pradesh

The Tughlaq dynasty came to an end after. Timur's invasion of Delhi in 1398 A.D. Taking advantage of the situation, in 1401 A.D., the Governor of Dhar, Dilawar Khan Ghori, originally from Afghanistan, declared himself as Sultan of Dhar. His son, Hoshang Shah succeeded him in 1405 A.D. and shifted the capital to Mandu permanently.

Hindola Mahal, built in 1425 A.D., is also known as Swinging Palace due to its sloping sidewalls. The tapering walls slope at approximately 77 degrees. The whole building is 'T' shaped with the oblong portion forming an audience hall and the cross-bar portion, the royal apartments. The audience hall is 110 ft. long, 60 ft. wide and 35 ft. high, with several arcades around a huge room framed with transverse arches and overlooked by a gallery. The royal apartments were built in two storeys with projected windows artistically designed which are enriched with an ornamental facade with delicate *jali* work in sandstone. The whole edifice gives an impression of massive solidity.

8. Jahaz Mahal, Mandu, Madhya Pradesh

Mahmud Khan Khalji, a Turk minister to Hoshang Shah's son, poisoned him in 1436 A.D. and established the Khalji dynasty in Central India. He built Jahaz Mahal in late 15th century A.D. for his queens.

True to its name, Jahaz Mahal, situated between two artificial lakes, Munja Talao and Kapur Talao, resembles a ship from a distance. The whole edifice is massive and measures about 100 m. by 15 m.

It has an arcaded ground storey with a broad eave above and a wide flight of steps leading to a roof terrace. On the ground floor, there are three large halls with a beautiful bathing courtyard, luxurious fountain courts, while on the rooftop are pavilions, kiosks and cupolas. Its reflection in the Munja and Kapur Talao has a magical effect on the viewers. In the inset picture, one can see the back side view of Jahaz Mahal.

9. Ashrafi Mahal, Mandu, Madhya Pradesh

Ashrafi Mahal, built by Mahmud Khan Khalji in 15th century A.D., is situated just opposite the Jami Masjid. Originally conceived as a *madrassa* for Islamic scholars, it is now lying in ruins. Its walls were constructed of roughly prepared rubble as much attention was paid on its colourful surface treatment. The Persian art of glazing was borrowed from Multan and can be seen in this brilliantly coloured domed structure.

In 15th century A.D., a seven storeyed Tower of Victory was built by Mahmud Khan Khalji to commemmorate his victory over Rana Kumbha of Chittor, which has since collapsed.

In 1450 A.D., an imperial mausoleum was built upon the terrace of the *madrassa*. It was raised on a 27 ft. high plinth. A flight of steps lead to a pillared portico with loggias on each side topped by an immense dome. In the inset picture one can see the Jami Masjid.

10. Baz Bahadur Palace, Mandu, Madhya Pradesh

Baz Bahadur Palace, built in 1509 A.D., is a manifestation of the legendary tale of love of the poet-prince Baz Bahadur for his beautiful wife, Rani Roopmati.

Originally built as an army observation post, its unique features are its spacious open court with halls and rooms on all four sides. The Roopmati's pavilion, open at the top was a retreat of the lovely queen, from where she could see the river Narmada flowing through the Nimar plains far below.

At the foot of the palace is Rewa Kund, a reservoir fed by river Narmada, fulfilling the needs of the people living in the palace. Till date, the pool is considered sacred by the people.

11. Panna Palace, Panna, Madhya Pradesh

Panna, the city of diamonds, originally inhabited by Bundelas, is a well-laid out city. In 1886 A.D., an English architect designed the Panna Palace for Rudra Pratap Singh.

A flight of wide steps delineated with carved parapets lead to the colonnaded facade, Corinthian capitals, pedimented doorways and a covered passageway enriched with elaborate scrollwork.

Although predominantly Roman in style, it has certain Indian features as well, for instance one can see lotus leaves instead of acanthus leaves round the Corinthian capitals.

A marked contrast can be seen between the front and rear section of the palace. In the front, there are rooms designed to meet the needs of European guests, and the rear section (inset) houses the *zenana*, sacred tank, summer pavilion and servant quarters.

12. Rewa Palace, Rewa, Madhya Pradesh

Rewa Palace also known as Old City Palace is a synthesis of Rajput and Mughal styles of architecture. Originally built by Baghela chiefs under the hegemony of Mughals in the 16th century A.D., it comprised of Durbar Hall and reception halls. In later years, many other temples, courtyards, bathing places and number of halls and passageways were added to the palace.

Durbar Hall is a vast hall with gilded walls and coloured glass work emanating imperial power and grandeur. The unique features of the reception halls are fluted columns, foliated plinths and capitals, cusped arches flanked by lamp-niches.

13. Govindgarh Palace, Rewa, Madhya Pradesh

Govindgarh Palace is at a distance of 24 kms. from Rewa city. It was built in Rajput style for Raghuraj Singh of Rewa as a hunting retreat. The palace situated on a lake, surrounded by mangroves and jungle, has an adjacent compound with an arch on a huge platform carved in the shape of a lotus. In the inset picture, one can see the Kathi Mahal.

14. Nrising Dev Palace, Datia, Madhya Pradesh

Nrising Dev Palace, built in 1620 A.D. by Bir Singh Deo, Bundela chief, is one of the finest buildings in India. The five storeyed palace, 130 ft. in height, stands on a rocky outcrop.

It is square in plan, with four corner towers having a profusion of balconies and elegant bridges linking one pavilion with the other pavilion. The whole palace is symmetrically built as a single integrated unit with domes and kiosks, arcades and eaves on every side. The central pavilion contains royal apartments. On the southern side, one can have a delightful view of Karna Sagar Lake. In the inset picture, one can see the backside view of Nrising Dev Palace.

15. Ajaipala Temple, Ajaigarh Fort, Madhya Pradesh

Ajaigarh fort, buiilt by Chandellas in the 9th century A.D. is perched on a granite outcrop. The fort is named after the sage Ajaipala who lived on Kedar *parvat*. Even today, Ajaipala temple, though now in ruins, is the most interesting place. Tier upon tier of elaborately carved stones, taper gently upwards and number of *sati* pillars engraved with divine motifs can be seen in the premises of Ajaigarh fort.

16. Asirgarh Fort, Asirgarh, Madhya Pradesh

Situated on an isolated outcrop of the Satpura range, Asirgarh Fort can be seen from a long distance. Strategically located 48 kms. south of Khandwa and 20 kms. north of Burhanpur. It is also regarded as an entrance gateway of Deccan.

Built by a herdsman, Asa Ahir, in 1370 A.D., it is one of the oldest forts of India. There are two main approaches to the fort–one on the 'western side, ascending in the shape of a serpentine, and second on the south-east, which used to be the secret passage at that time guarded by seven gates. The western side is well defended by three walls–the lower most defensive wall called Malaigarh, the middle one known as Kamargarh, and the top most wall is called the Asirgarh.

The most impressive site of the fort is near the main entrance where a massive bastion known as gun-tower (inset) was built to strengthen the line of defence on the south-west side. It is equipped with numerous parapet battlements with pointed tops. The top of this tower can be reached through the steps on the outside and entered through a pointed arch gateway.

17. Dhar Fort, Dhar, Madhya Pradesh

Dhar, the capital of the native State of that name, lies 53 kms. west of Mhow. During the reign of Dilawar Khan Ghori, a Ghurid ruler in 15th century. A.D., a number of building projects were carried out, contrary to the period when Dhar was under the suzerainty of the Paramaras.

In the 10th centrury A.D., it was the Paramar King Bhoja I who built it as the capital city and laid the foundation of the Dhar Fort. The fort built in red stone was encircled by a fortification wall with four gateways and embellished with 24 round and 2 square towers. It is a remarkable example of provincial Indo-Islamic architecture in Malwa. The Ghurid rulers borrowed several features from Delhi's architecture particularly the use of battered walls of the dismantled Hindu temples, the pointed arch with spearhead fringe, the arch-lintel-bracket combination, the 'boat-keel' dome, pyramidal roof and other decorative motifs.

18. Kalinjar Fort, Kalinjar, Madhya Pradesh

Kalinjar Fort, reputed to be one of the oldest forts of India, lies in the Bundelkhand region. Built at a height of 375 m. from the ground level on the last spur of the Vindhya mountains, Kalinjar fort is at a distance of 57 km. from Banda. Originally the seat of Chandellas, in the 11th century A.D. it was invaded by Mahmud of Ghazni in 1019 A.D., Qutub-ud-Din Aibak in 1202 A.D., Humayun in 1530 A.D. and Sher Shah in 1545 A.D.

Expanded in a circumference of 2 km. from east to west and 1 km. from north to south, this square shaped fort with 45 m. high rampart has seven entrance gates, considered as the auspicious number. These are known as Alamgir *Darwaza*, Ganesh *Darwaza*, Chandi *Darwaza,* Budh Budr *Darwaza,* Hanuman *Darwaza,* Lal *Darwaza* and Bara *Darwaza.* The steep and stony route from Alamgir *Darwaza* to Ganesh *Darwaza* is called Kafir Ghat. Only Budh Budr *Darwaza* is approached by a flight of steps. All the gates are guarded by either towers or bridges.

19. Aman Singh's Palace, Kalinjar Fort, Madhya Pradesh

Near the Koth Tirth, a large tank which supplied water to the whole fort, is King Aman Singh's palace. Its courtyard is hewn out of the rock and surrounded by parallel rows of peacock arches. Here one can see several precious stone-relics — a reclining Shiva, a dancing Ganesha, Nandi Bulls etc. From its interiors, two flights of steps lead down to Neel Kanth Temple, dedicated to Lord Shiva which reminds us of the glory of the past. Distorted sculptures can still be found in the premises — a toppled figure with the face of Hanuman, Vishnu in the incarnation of boar, lifesize dancing Ganesha etc.

20. Narwar Fort (Courtyards), Gwalior, Madhya Pradesh

Narwar is one of the three main hill-forts of the erstwhile Gwalior State, the other two being Gwalior and Chanderi forts. In dimensions, it is next to Gwalior fort. The Kachhwahas were the first and foremost rulers of this region. Towards the middle of the 13th century A.D., Gurjara-Pratiharas, after being defeated by Iltutmish, shifted from Gwalior to Narwar. They were soon replaced by Chahada Deo, founder of the dynasty of Yajapalas of Narwar.

The hill fort is situated over an isolated flat-topped hill of Vindhyan range, 120 m. high from the ground level. It is surrounded by a natural moat formed by the Sindh river flowing on its western and northern side. The entire region had been divided into four sectors — Majhloka, the middle portion; Dulha-Ahata, the western portion; Madar-Ahata, south eastern portion and Gurjar-Ahata, southern-most portion.

In the Majhloka, there were number of palaces which are in ruins now. These palaces built by Kachhwaha kings are protected on the western side by a massive fortified wall. It demarcates this from the rest of the inhabited area. Each palace comprises a series of courtyards having audience hall, throne-room, pavilions, *hammams* with bathing arrangements attached with pleasure gardens etc. The palaces were profusely decorated with glass inlay-work and wall paintings of Rajput style.

21. Badal Mahal, Chanderi, Madhya Pradesh

The Badal Mahal Gate, 50 ft.high and 25 ft. wide, stands unattached from other buildings. It has two tapering buttresses on either side, within these twin supports, the archway is divided into two storeys. The upper storey is filled with four decorative stone screens. The lower storey has an arched passage.

Its ornamentation reflects the unusual mixture of architectural features borrowed from Delhi, Malwa, Rajputana and even Gujarat.

22. Kushak Mahal, Chanderi, Madhya Pradesh

Kushak Mahal, built in 1445 A.D. by Mahmud Shah I of Malwa, is one of the earliest monuments of Chanderi. Originally a seven-storeyed palace of which only four exist now, it is square in plan with entrance in the middle of each side. Its walls, plain from exterior, have balconied windows at regular intervals.

In the interior, two arched passages cross at right angles, thereby dividing the whole area into four quadrants within which are located palace halls. The same pattern is carried on to the storeys above with arched passages from inside and light filters through the balconied windows on the outside.

23. Chanderi Fort, Chanderi, Madhya Pradesh

The Chanderi Fort, now in ruins, was once subjugated under the reign of Sisupala – the Chedi. It lies within a circuit of 6 km. lengthwise and offers a birds eye view of the city of Chanderi.

It has five gates – Taliya *Darwaza* on the east; Delhi *Darwaza* in the north; Faquir *Darwaza* and Changa *Darwaza* on the west; and Khuni *Darwaza* on the south. At present only three are in proper state which are Delhi *Darwaza,* Faquir *Darwaza* and Khuni *Darwaza.*

One of the prominent features of Chanderi Fort is the *Shardula* motif found on the niches. Number of bastions, which served as watch towers were built in the premises of the fort of which only three are existing. They are Kamala *burj* in the north, Gada *burj* in the south and Bhad Bhad *burj* in the west.

24. Indore Palace, Indore, Madhya Pradesh

Indore Palace, also known as Juna Rajawada, was built by Maharaja Malhar Rao Holkar II. Its most distinguishing feature, a seven storeyed gateway, is a mixture of French, Mughal and Maratha style of architecture. The lofty and imposing structure as canted bays on either side of a central archway.

A landmark of Indore, Juna Rajawada has beautiful surroundings. To its right is Gopal Temple, built in 1832 A.D., with a large central hall having granite pillars supporting an elaborately decorated roof. Inside the palace is a temple of Malhari Martand, a family deity and across the palace is Anna Chatra, the charitable place for the poor sections of society.